डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 33 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

जयपुर >> सोमवार, 21 फरवरी, 2022

hillviewsamachar@gmail.com

मानसरोवर और मालवीय नगर लगातार अवैध निर्माणों की चपेट में

2/675 मालवीयनगर ज़ोन

94/16 मध्यम मार्ग, मानसरोवर

मध्यम मार्ग मानसरोवर

शालिनी श्रीवास्तव

जयपुर। एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी मानसरोवर का सुख-चैन अब भेंट चढ़ रहा है भू माफियाओं और अतिक्रमणकारियों के नापाक इरादों के और इसी धारा में बह रहा है मालवीय नगर का सुख-चैन भी।

इन रिहायशी और पॉश कॉलोनियों में से गुज़रना मुश्किल हो गया है। गली-गली में बाज़ार और वाहनों का जमावड़ा तो बढ़ ही गया है साथ ही बढ़ गया है घर से दुकान में तब्दील होते भवनों का अतिक्रमण। बहुमंज़िला भवन बिना निगम अनुमति के सर उठा रहे हैं और तो और प्रशासन और राजनीति के बड़े दिग्गज़ों का हाथ और साथ पूरे ज़ोर-शोर से सहयोग कर रहा है। जहाँ एक और रेवेन्यू का सबसे बड़ा भाग भवन निर्माण,नियमितीकरण आदि से आता है वहीं एक और निगम के नाक के नीचे सारे काम अवैधता के साथ हो रहे हैं। राजधानी में इस जंगल राज का शेर कौन है यह किसी से छुपा नहीं। चौड़ा रास्ता का जयपुर कॉलेज हो या राजापार्क में चढ़ते-बढ़ते अतिक्रमण या मालवीय नगर, मानसरोवर के ये अवैध निर्माण..... बिना किसी बड़ी पावर और प्रशासनिक राजैनतिक अनर्गल अवैध सहयोग के यह कभी सम्भव नहीं हो सकते। मानसरोवर के ये अवैध निर्माण अभी भी चरम पर हैं-- मध्यम मार्ग मानसरोवर,अग्रवाल फार्म मानसरोवर, 2/675 मालवीयनगर ज़ोन 94/16 मध्यम मार्ग, मानसरोवर मानसरोवर के ही अन्य अवैध निर्माण सूची 119/90, 119/474, 104/6-7-8, 112/18, 2/154, 72/68, 72/67, 69/410

प्रशासन और शासन की लिप्तता शहर की शांति को लगातार ग्रहण लगा रही है। इस संबंध में मालवीयनगर ज़ोन व मानसरोवर ज़ोन नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के प्रतिउत्तर

पिछले 2-3 माह से हमने जन-जागरूकता अभियान भी चलाया है कि लोग परमिशन लेकर निर्माण कार्य करें और जो अवैध निर्माण कर रहे हैं उन्हें ज़ोन ही नहीं हेडऑफिस से भी नोटिस जारी किए गए हैं। मानसरोवर ज़ोन के पास बहुत कम एरिया पावर में है। हाउसिंग बोर्ड और जेडीए के पावर में ज़्यादा एरिया अतः हमारी सीमा क्षेत्र तक होने वाले निर्माण कार्यों पर हम कार्यवाही कर रहे हैं।

हेमाराम चौधरी, उपायुक्त मानसरोवर ज़ोन नगर निगम जयपुर (ग्रेटर)

ममता नागर, उपायुक्त मालवीयनगर ज़ोन नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) महोदया से गत गुरुवार से लगातार संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन वे अपनी सीट पर उपलब्ध नहीं हुईं। तत्पश्चात उन्हें व्हाट्सएप पर मैसेज कर ओर ऑडियो भेजकर भी उनके मालवीय नगर ज़ोन एरिया के अवैध निर्माणों से वाकिफ़ करवाकर उनकी ओर से की जाने वाली कार्यवाही का प्रश्न किया गया लेकिन वहाँ भी वे निरुत्तर ही रहीं। वजह चाहे जो भी हो लेकिन मालवीय नगर ज़ोन की लचरता और लापरवाही लगातार निगम को चूना लगा रही है यही प्रतीत होता है।

अग्रवाल फार्म मानसरोवर

ख़बर-बेख़बर

राजधानी में राज है बस अब भू-माफियाओं और अतिक्रमणकारियों का

नगर निगम जयपुर ग्रेटर की 8 महिनों तक कामचलाऊ मेयर रही शील धाबाई के 8 महिनों के कार्यकाल में 80 से ज्यादा अवैध बिल्डिंगों का निर्माण मानसरोवर व मालवीय नगर जोन में हुआ और वर्तमान में भी अब ग्रेटर नगर निगम वित्त विभाग की चेयरमेन शील धाबाई शोर मचाती हैं कि निगम में वित्त का घड़ा रिक्त है। एक ओर वित्त प्रवाह का रोड़ा भी खुद ग्रेटर नगर निगम प्रशासन बना हुआ है । ये अपने घर भर रहे हैं और प्रशासन कटोरा थामे खड़ा है बीच बाज़ार?

शील धाबाई

चल रहे अवैध कार्यों के लिए आँखों पर पट्टी या तो धनापूर्ति (रिश्वत) की बंधी है या फिर प्रेशर (पावर का दबाव) की यह समझना बड़ा आसान है।

जयपुर में किसी भी कोने में चले जाइये। कमर्शियल बिल्डिंग्स की बाढ़ आ गयी है। रिहायशी क्षेत्रों का लगातार व्यवसायिकरण हो रहा है। सैटबैक न छोड़ने का मेटर हो या बहुमंज़िला इमारतों का लगातार अवैध निर्माण।

बिना नक्शे, बिना अनुमति के अवैध निर्माणों की बाढ़ लगातार शहर को लील रही है। किसी भी तरह की जानकारी मीडिया द्वारा लिए जाने पर या तो प्रशासन की लचरता,मज़बूरी,बँधे हाथ और निरिहिता मिलती है या दबे शब्दों में ऊपरी पावर का हवाला दिया जाता है।नोटिस उन्हें जारी किए जाते हैं जहाँ से आपूर्ति नहीं होती और उन्हीं नोटिसों को सामने रखकर बाक़ी बड़े माफ़ियाओं को पर्दे में रखा जाता है। निगम इन अवैध निर्माणों पर चुप नहीं बैठा यह सबूत इन दिखावटी नोटिसों से पेश किया जाता है। नींव डालने से लेकर इमारतें गगन छूने लगती हैं लेकिन कार्यवाही आगे नहीं बढ़ती।

आख़िर कहाँ से पावर मिल रही है इन भूमाफियाओं को अतिक्रमणकारियों को। यह सोचने का विषय है। जनता को जवाब का इंतज़ार है कौन देगा इन प्रश्नों के उत्तर ?

बहू को 60 किलो सिक्कों से तोला

कार्यालय संवाददाता

झुंझुनूं। झुंझुनूं में सास ने अपनी बहू को अनूठा सरप्राइज दिया। शादी के बाद पहली बार बहू घर आई तो उसे सिक्कों से तोला। यह देखकर वहां मौजूद सभी रिश्तेदार हैरान हो गए। तराजू में रखे सिक्कों का वजन करीब 60 किलो था। इसमें रखे सिक्के मुंह दिखाई के शगुन के तौर पर बहू को दे दिए। दरअसल महती की ढाणी निवासी सूबेदार हवा सिंह धायल के बेटे मनीष (23) की शुक्रवार को कोलिंडा निवासी गोवर्धन की बेटी पूनम(19) से शादी हुई थी। शनिवार को बेटे-बहू दोनों घर आए। सास कविता ने बताया कि उनकी इच्छा थी कि मुंह दिखाई में वे बहू को ऐसा सरप्राइज दे, जिस वो उम्र भर याद रखें। इसके लिए आइडिया आया कि बहू को बेटी बनाकर लक्ष्मी रूप में लेकर आए है। ऐसे में सिक्के से तोलने का प्लान बनाया था। जब शनिवार को पूनम घर आई तो सिक्कों में तोला। इन सिक्कों का वजन करीब 60 किलो था। यह करीब 21 हजार के सिक्के थे जो बहू को मुंह दिखाई के तौर पर दिए।

पैसे नहीं, सम्मान बड़ी बात

बहू पूनम बोली, पैसे बड़ी चीज नहीं है। जो सम्मान ससुराल में मिला है, इससे बहुत खुश हूं। पूनम ने बताया कि जब सिक्कों से तोला जा रहा था तब पूरा परिवार उसके पास खड़ा था। यह जिन्दगी का सबसे बेहतर पल था। दूल्हा मनीष धायल सेना में है। दुल्हन पूनम गृहणी है। दूल्हे के पिता गोवर्धन भी सेना में सूबेदार से रिटायर हुए है। हवा सिंह ने बताया कि पत्नी कविता ने अपनी बहू को मुंह दिखाई में सिक्कों से तोलकर नई मिसाल पेश की है। इस पहल की गांव में काफी चर्चा हो रही है। सास कविता ने बताया कि इतनी तरक्की के बाद भी आज समाज में बहू-बेटियों के प्रति सोच में बड़ा बदलाव नहीं आया है। मेरा मानना है कि बेटी घर की शक्ति भी है और लक्ष्मी भी।

बजट में जो चाहो माँग लो, ऐसा मौका कभी नहीं आएगाः सीएम गहलोत

किसानों की आय दोगुना करने में कामयाब नहीं हुए पीएम

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा, बजट में जो चाहे मांग लो, ऐसा मौका फिर नहीं आने वाला। 23 को बजट आ रहा है। उससे पहले कोई सुझाव देना चाहें तो किसान आयोग अध्यक्ष और उपाध्यक्ष आपस में बात कर दे सकते हैं। कृषि मंत्री को भी मैंने खास तौर से कहलवाया है। अगर विभाग की तरफ से और कोई बात करना चाहते हैं तो बताइएगा। जो चाहो वो मांग लो, ऐसा मौका कभी नहीं आएगा। गहलोत किसान आयोग अध्यक्ष महादेव सिंह खंडेला और उपाध्यक्ष दीपचंद खैरिया के पद संभालने के मौके पर बोल रहे थे।

गहलोत ने कहा कृषि का क्षेत्र इतना बड़ा है, इसके बारे में कई तरह की चर्चाएं शुरू से ही होती रहती हैं। समय आ गया है कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ाएं। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि हम 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी कर देंगे। अभी तक शायद वो उसमें पूरी तरह कामयाब नहीं हुए हैं। हम लोग चाहेंगे कि किसान की आमदनी बढ़े। किसान मजबूत हों, इसीलिए सरकार में लगातार कई योजनाएं व नवाचार लागू किए जा रहे हैं। गहलोत ने कहा 23 तारीख को अलग से कृषि बजट की शुरुआत हो रही है। मैं उम्मीद करता हूं, आप लोगों को लगेगा कि पहला प्रयास अच्छा रहा है। कुछ कमियां भी रह सकती हैं। आप लोगों के सुझाव आएंगे तो अगली बार उसमें सुधार करेंगे।

कृषि बिजली की अलग कंपनी बनाने में दिक्कतः गहलोत ने कहा हमने अलग से कृषि बजट पेश करने का फैसला करके एक शुरुआत की है। हमने किसानों के लिए अलग से बिजली कंपनी बनाने का फैसला किया, लेकिन उसमें अभी थोड़ी दिक्कत आ रही है। वह काम भी बड़ा है। सारे जीएसएस और सिस्टम को कैसे अलग करें, क्या करें, इस पर काम चल रहा है। हम किसानों के लिए एक से बढ़कर एक योजनाएं ला रहे हैं। जब नारायण सिंह किसान आयोग के अध्यक्ष थे, तब किसानों का एक डेलिगेशन इजरायल गया था। मैं भी बाद में गया था। मुझे मालूम है कि इजराइल में उन्नत खेती का माहौल है। पहले इजराइल भी हमारी तरह रेगिस्तानी इलाका था। आज वहां की खेती की दुनियाभर में पहचान बन गई है। हम भी चाहेंगे कि हमारे किसानों को भी इजराइल की तरह लाभ मिले।

किरोड़ी लाल मीणा का आरोप...

मिलीभगत कर आरएएस मुख्य परीक्षा का सिलेबस बदला, रीट पेपर से भी बड़ा घोटाला साबित होगा

महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंस संस्थान के अध्यक्ष पर लगाए आरोप

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। रीट पेपर लीक के बाद अब राज्यसभा सांसद किरोड़ी लाल मीणा ने आरएएस मुख्य परीक्षा में गड़बड़ी की आशंका जताते हुए सरकार को घेरा है। मीणा ने आरोप लगाया है कि आरएएस मुख्य परीक्षा का सिलेबस साजिश के तहत बदला गया है। रीट पेपर लीक से भी बड़ा यह घोटाला साबित होगा। मीणा ने कहा है कि परीक्षा अधिसूचना के समय जो सिलेबस बनता है उसे बीच में नहीं बदल सकते। यह सिलेबस अधिसूचना के बाद बदला गया है। हाइकोर्ट के आदेशों का उल्लंघन है।

किरोड़ी मीणा ने आरोप लगाया कि महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंस संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर बीएम शर्मा पूर्व आरपीएससी चेयरमैन रहे हैं। अभी महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंस संस्थान के अध्यक्ष होते हुए भी कोचिंग चला रहे हैं। यह गैरकानूनी है। मीणा ने आरोप लगाया कि आरएएस मुख्य परीक्षा का सिलेबस प्रोफेसर बी.एम. शर्मा और राजीव गांधी स्टडी सर्कल के लोगों ने मनचाहे तरीके से तैयार कराया है। प्रोफेसर बी.एम. शर्मा और राजीव गांधी स्टडी सर्कल की मंडली ने परीक्षा के अति निकट मिलकर आरएएस मुख्य परीक्षा के सिलेबस में बदलाव कराया है। अपने लोगों को फायदा पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया है कि सिलेबस में वही मेटर रखा गया है जो इस कोचिंग सेंटर पर पढ़ा रहे हैं, ताकि लेनदेन कर आरपीएससी में ज्यादा से ज्यादा अपने लोगों का चयन कराया जा सके। किरोड़ी मीणा ने कहा है कि धरना देने वाले अभ्यर्थी की मांग शत-प्रतिशत सही है। उनकी मांग के अनुसार परीक्षा की तिथि बढ़ाई जाए जिससे एक और बड़े घोटाले से बचा जा सके।

सरकार ने कैसे दिए 100 करोड़: महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंस को चलाने के लिए सरकार ने करीबन 100 करोड रुपए का प्रशासनिक आदेश प्रदान कर दिए जिसका विधानसभा में कोई एक्ट नहीं लाया गया ना ही अध्यादेश जारी किया गया और इतनी बड़ी रकम को लेकर संस्था में गबन किया जा रहा। इस गबन में राजीव गांधी स्टडी सर्कल के पदाधिकारी भी शामिल है। इसके अलावा प्रोफेसर बी.एम. शर्मा जो महात्मा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नेंस एंड सोशल साइंस के अध्यक्ष हैं। इस समय फ्रेंड्स कॉलोनी नियर प्रदेश होटल लाल कोठी स्थित अपने बंगले पर कोचिंग सेंटर चला रहें है, जिसने आरएएस सहित अन्य परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है।

एसएमएस अस्पताल के सीनियर प्रोफेसर डॉ अनिल शर्मा की उपलब्धि

एसएमएस में बिना छाती की हड्डी काटे हुई हार्ट सर्जरी

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। एसएमएस अस्पताल के सीटीवीएस विभाग के सीनियर प्रोफेसर डॉ अनिल शर्मा ने एसएमएस में बिना छाती की हड्डी काटे सर्जरी की।

डॉ अनिल शर्मा ने बताया, सामान्यतः ओपन हार्ट सर्जरी छाती की हड्डी (स्टर्नम) को काट के की जाती है, लेकिन एसएमएस अस्पताल में उनकी टीम द्वारा छाती में बायीं तरफ छोटे से चीरे द्वारा बिना छाती की हड्डी काटकर एक 6 वर्षीय बच्चे का ऑपरेशन किया है. इस बच्चे को टोसिंग बिंग नाम की जन्मजात विकृति थी. टोसिंग बिंग नाम की जन्मजात विकृति में दिल में छेद होता है, जिसके कारण शुद्ध एवं अशुद्ध रक्त हृदय में मिलने लगते हैं, इसके फलस्वरूप बच्चे को सांस फूलने, नीला पड़ने जैसी शिकायत होती है। इस तरह के बच्चों का समय पर ऑपरेशन न किया जाये तो बच्चे का हृदय धीरे धीरे कमजोर पड़ने लगता है और मृत्यु हो जाती है. ओपन हार्ट सर्जरी सामान्यतया छाती की हड्डी काट कर की जाती है, बिना छाती की हड्डी काटे छोटे चीरे द्वारा सर्जरी वयस्कों में तो कई केंद्रों पर हो रही है किन्तु नवजात शिशुओं एवं बच्चों में इस तरह की सर्जरी केवल एसएमएस मेडिकल कॉलेज में की जा रही है. अभी तक लगभग 1000 से अधिक वयस्कों एवं 50 बच्चों में इस तरह के विभिन्न ऑपरेशन किये जा चुके हैं. इनमे से हृदय के वाल्व बदलना, मिक्सोमा नामक दिल के कैंसर, दिल के छेद एवं विभिन्न जनजात दिल की विकृतियों मुख्य हैं. टोसिंग बिंग विकृति का छाती पर बायी तरफ छोटे चीरे द्वारा यह सर्जरी अपने आप में विश्व की पहली सर्जरी है और इसका मेडिकल जर्नल्स में अभी तक उल्लेख नहीं है. यह सर्जरी पारम्परिक उपकरणों द्वारा की जा सकती है इसके लिए बहुत अत्यधिक खर्च एवं विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता नहीं. छाती की हड्डी काटने से होने वाले इन्फेक्शन का कोई खतरा नहीं मिनिमल इनवेसिव सर्जरी के दौरान जांघ में केन्युलेशन से होने वाले दुष्परिणामों से मुक्ति पैरों में रक्त अवरोध से होने वाले नुकसान का कोई खतरा नहीं है।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> सोमवार, 21 फरवरी, 2022

संपादकीय

ज्ञान पाने की व्यवस्था यदि मातृभाषा से भिन्न दूसरी भाषा में होती है तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कठिन हो जाती है

आज अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर भारत की भाषाई विविधता का अवलोकन उपयोगी होगा। वस्तुत- भारत की भाषाई विविधता का अद्भुत विस्तार और उसका सहज स्वीकार प्राचीन काल से इस देश में सामाजिक बर्ताव का अहम हिस्सा रहा है। अथर्ववेद में कहा गया है कि यह धरती अनेक भाषाओं को बोलने वालों और धर्मों का अनुगमन करने वालों का भरण-पोषण करती है। आज भी घर, बाहर, कार्यालय और बाजार में लोग अलग भाषाओं का प्रयोग करते मिलते हैं। भाषा के साथ हमारी रिश्तेदारी का सौंदर्य इस बात में भी निहित होता है कि उसमें हमेशा नए के सृजन की गुंजाइश बनी रहती है। उदाहरण के लिए आज अनेक भाषाओं में लगभग तीन सौ रामायण उपलब्ध हैं। कोई किसी का अनुवाद न हो कर नई रचना के रूप में उपलब्ध हैं। संस्कृत से लोकभाषा में हुए रूपांतर भी उसके विपरीत या उसके विरोध में जाकर नहीं हुए थे, बल्कि उसका आधार लेकर उसे सहज और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने के उद्देश्य किए गए थे। यह दर्शाता है कि भाषाओं में अंतरावलंबन होता है। भाषा की विविधता समस्या न रह कर समृद्धि का अवसर देती है।

भारत में भाषा की बहुलता समाज की एक स्वाभाविक स्थिति थी। बहुभाषिकता व्यवहार में थी। भाषाओं के लिए उदारता की यह भावना और उनके प्रति सहिष्णुता हमारे मानसिक जगत का विस्तार करने के साथ व्यावहारिक स्तर पर सामाजिक सद्भाव का मार्ग भी प्रशस्त करती है। भाषाओं को एक-दूसरे के आमने-सामने खड़ा कर अस्मिता की राजनीति के लिए भुनाना क्षोभकारी है। जैसे अभी झारखंड में ही राज्य सरकार ने कई जिलों में भोजपुरी, मगही, मैथिली और अंगिका की मान्यता समाप्त कर दी है। भाषाओं पर विचार करते हुए हमें यह भी याद रखना होगा कि वाचिक आधार पर भारतीय संस्कृति की निर्मिति की परंपरा बड़ी पुरानी है। इतिहास, पुराण और अनेक ग्रंथ बहुत दिनों तक पीढ़ी-दर-पीढ़ी वाचिक रूप में एक से दूसरे को मिलते रहे और सुरक्षित बने रहे। छपे के अक्षर न लिख-पढ़कर भी सुन-सुन कर भी गांवों में बड़ी संख्या में लोग निरक्षर होते हुए भी शिक्षित रहते थे। आज भी कथा सुनने का सुख पाने के लिए गांवों ही नहीं, शहरों में भी आम जनता लालायित रहती है। राम-कथा, भागवत-कथा और कृष्ण-कथा सुनाने वाले कथावाचकों की आम जनता में बड़ी मांग रहती है। सत्संग में कथा-श्रवण का विशेष स्थान होता है। इन सबके साथ आत्मिक शांति पाने की चेष्टा करते हैं। इस तरह वाचिकता का समाज की मानसिकता के साथ बड़ा गहरा नाता है।

यह एक तथ्य है कि संस्कृति, भाषा और समाज एक-दूसरे के साथ बड़ी गहनता से जुड़े होते हैं। संवाद का प्रमुख आधार होने के कारण किसी समाज या समुदाय की पहचान को रचने-गढ़ने में उसकी भाषा की केंद्रीय भूमिका होती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक न्याय, समता और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना अंग्रेजी से संभव नहीं है। वर्ष 1837 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत की अदालत और शासन के काम के लिए फारसी की जगह अंग्रेजी को लागू किया था। तदोपरांत इसके कारण भारत सांस्कृतिक रूप से दुर्बल हुआ, उपभोक्तावाद को शह मिली, प्रकृति और पर्यावरण से दूरी बढ़ती गई जिसका खामियाजा आज सभी भुगत रहे हैं। अंग्रेजी के प्रचलन से देश में गैर बराबरी, भेदभाव और जीवन जीने में असुविधा बढ़ी है। भारत में भाषा के सत्य से मुंह मोड़ कर अंग्रेजी को जिस तरह एक अकाट्य विकल्प की तरह बैठा दिया गया उसने विचार और कार्य को अंग्रेजी के माध्यम पर आश्रित बना दिया। द्वारपाल की तरह अंग्रेजी अंदर (विहित/स्वीकृत) और बाहर (अविहित/अस्वीकृत) की श्रेणियों में कार्य, ज्ञान, व्यवहार और अस्तित्व को बांटने लगी। वास्तव में अंग्रेजी एक ऐसी सीढ़ी बन गई जिस पर चढ़कर ही किसी को व्यवसाय और कमाई आदि विभिन्न जीवन व्यापारों की राह पर चलना संभव हो पाता है। यह अलग बात है कि अंग्रेजी ही नहीं अधिकाधिक भाषाओं को जानना-समझना श्रेयस्कर है, परंतु ज्ञान के माध्यम और औपनिवेशिकता के पोषक की भूमिकाओं के बीच अंतर करना जरूरी है। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि अंग्रेजी कहीं न कहीं कुशलता, मौलिकता और सृजनात्मकता को भी कुंठित करती सी दिख रही है जिसके चलते विदेश की ओर प्रतिभा पलायन बढ़ता जा रहा है और देशज शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार नहीं हो रहा है। मातृभाषा स्वाभाविक रूप से और बड़ी गहनता के साथ बच्चे को जन्म के समय से ही उसके परिवार में उपलब्ध रहती है। मातृभाषा का ध्वनिरूप और उससे जुड़े हाव-भाव लिखने-पढ़ने की क्षमताओं के पहले से ही उपलब्ध रहते हैं। स्कूल में जाने के पहले औपचारिक रूप में बच्चे के पास प्रचुर शब्द भंडार (तीन साल की उम्र में 1000 शब्द) सहज में उपलब्ध रहता है और वह प्रभावी भी रहता है। इस तथ्य के मद्देनजर सभी विकसित देशों में मातृभाषा में ही प्रारंभिक शिक्षा देने की प्रथा स्वीकृत है।

ज्ञान पाने की औपचारिक व्यवस्था यदि मातृभाषा से भिन्न किसी दूसरी भाषा में होती है तो सिखाने और सीखने का काम अनावश्यक रूप से कठिन हो जाता है और समय तथा श्रम भी अधिक लगता है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का उपयोग मौलिकता, सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि को सुनिश्चित करने वाला होता है। नागरिक जीवन में मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा का अधिकाधिक उपयोग लोकतंत्र की व्यवस्था को भी को मजबूत करता है। भाषाएं जीवन का अविभाज्य अंग होती हैं इसलिए उनको नष्ट होने से बचाने का काम होना चाहिए। ऐसे में औपनिवेशिकता से उबरने, शिक्षा एवं विज्ञान को लोकमानस के पास पहुंचाने और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अधिकाधिक उपयोग होना चाहिए। नई शिक्षा नीति भी यही कहती है।

लाइफ में जरूरी है डिसिप्लिन

LIFESTYLE जोन

नहीं खलेगी समय की कमी

काम का दबाव ज्यादा हो तो हम खीझ में बोल भी देते हैं, 'दिन में सिर्फ 24 घंटे ही क्यों होते हैं?' सफल लोगों के पास समय ही समय. आप गंभीरता से सोचें और सफल लोगों की तरफ देखें तो आप उन्हें इतना काम करते पाएंगे कि मानो कुदरत ने उन्हें 24 नहीं, 25-26 घंटे या उससे भी ज्यादा समय दे रखा है. ऐसा क्यों होता है? क्योंकि वे एक व्यवस्थित और अनुशासित दिनचर्या के अभ्यस्त होते हैं. अपनी इस आदत से दूसरों की तुलना में वे रोज 1-2 घंटे आसानी से ज्यादा 'उगाह' लेते हैं.

- जेब में रखें कार्यसूची और पेन. हर सुबह 5 मिनट में तय करें कि आज दिन भर में कौन से जरूरी काम आपको करने हैं. जो काम होते जाएं, उन्हें काटते जाएं.
- अपने पेशे से जुड़ी मार्केट में दिखने वाली कोई नयी चीज, किसी अखबार, पत्रिका या इंटरनेट पर मिली कोई नयी जानकारी को तुरंत लिख लें.

फाइलिंग करें

ज्यादातर लोगों से कोई कागज मांगा जाए तो कागजों के ढेर में से जरूरी कागज खोजने में उन्हें काफी वक्त लग जाता है. वहीं समझदार और सफल लोगों में तरह-तरह के डाक्यूमेंट्स का वर्गीकरण करके उनकी अलग-अलग फाइल और फोल्डर बनाने की आदत होती है. ताकि जब जिसकी जरूरत हो, निकाल लिया जाए. बार-बार काम आने वाले डॉक्यूमेंट जैसे आधार कार्ड, वोटर आईडी और पैन कार्ड की फोटो कॉपी भी आपको हमेशा तैयार रखनी चाहिए. एलआईसी बांड, रसीदें, हेल्थ इंश्योरेंस, घरेलू उपकरणों की खरीद के बिल, बिजली व टेलीफोन के बिल, जमीन-जायदाद की रजिस्ट्री आदि की अलग-अलग फाइलें बनाकर रखें.

प्रबंधन है जरूरी

किसी भी वस्तु या कागज को जहां से इस्तेमाल करने के लिए उठाते हैं, वापस उसे वही रखें. घरेलू उपकरण, स्टेप्लर, स्क्रू ड्राइवर, चाकू आदि के लिए हमेशा बॉक्स का इस्तेमाल करें. लोगों से मिलने-जुलने का एक टाइम निश्चित करें. रिश्तेदारों या दोस्तों से ऑफिस में मिलें या बहुत जरूरी होने पर रिसेप्शन रूम में ही जाकर मिलें. पेशेवर प्रतिद्वंद्वी से भी अपने ऑफिस में या डेस्क पर मिलने के बजाय बाहर जाकर मिलें. इससे आप उन्हें न सिर्फ जल्दी निपटा पाएंगे, बल्कि अपनी बिजनेस सीक्रेसी भी मेंटेन कर पाएंगे.

साल के 16 घंटे खोई चीज ढूंढ़ने में गंवा देते हैं

एक अध्ययन में बताया गया कि एक औसत वयस्क साल में 16 घंटे तो अपनी खोई हुई चाबी या दूसरी चीजों को खोजने में बिता देता है. बिजनेस मार्केटिंग जर्नल में प्रकाशित एक रिपोर्ट में बताया गया है कि एग्जीक्यूटिव्स के इंटरनेट सर्वे में पता चला कि अव्यवस्थित रहने वाले कार्यकारी अफसर हर रोज कम से कम 1 घंटा बर्बाद कर देते हैं जो साल के अंत में समय के विशाल पहाड़ सा होता है. व्यवस्थित होने के लिए आपको थोड़ी सी मेहनत हर दिन करनी पड़ती है. इसके लिए कुछ तरीके आजमाएं...

OFF साइड

वैराग्य

एक ज्ञानी संत के उपदेश सुनने अच्छे-बुरे सभी तरह के लोग आते थे, कभी-कभी उनसे अत्यंत ऊंची आवाज में बात करने लगते थे. ऐसे अवसरों पर संत प्रायः मौन रहते थे. एक दिन उनके शिष्यों ने उनसे कहा, 'आप इस तरह ऊंची आवाज में चिल्लाने वालों का विरोध क्यों नहीं करते? उन्हें अपनी कुटिया से बाहर निकालिए और दोबारा आने से मना कर दीजिए.'

इस पर संत ने कहा, 'उन ऊंची आवाज में बोलने वालों का समर्थन तो किया ही नहीं जा सकता. यदि मैं उनकी बातों का खंडन करने लगूं तो वह नाराज हो जाते हैं. दही का मंथन करने से मक्खन निकलता है, लेकिन पानी का मंथन करने से कुछ नहीं निकलता है, तो फिर क्यों व्यर्थ ही अज्ञानियों से विवाद करके अपने मस्तिष्क को भारी बनाया जाए? उनकी अज्ञानता की वजह से मैं अपने आप को असहज और असहिष्णु क्यों बनाऊं?'

नॉलेज बाइट

कैसे शुरू हुआ झंडे का चलन

दुनिया का पहला झंडा किसी देश, प्रांत या सेना का नहीं था, बल्कि यह बुरी आत्माओं और प्रेतों से बचने के लिए था. प्राचीनकाल में लोग अपने घरों के ऊपर बांस लगाकर कपड़ा बांधते थे, जिस पर किसी खतरनाक जानवर का मुंह बना रहता था या गांव के ओझा द्वारा सुझाया गया कोई जादुई निशान अंकित रहता था. गांव में कोई त्यौहार-मेला होने पर भी लोग ऐसे ही झंडे के नीचे इकट्ठे होते थे.

ऐसा विश्वास था कि झंडे पर बनी आकृति देखकर बुरी आत्माएं और प्रेत डरकर दूर भाग जाएंगे. ईसा से 5 शताब्दी पहले चीन में झंडे का आकार ही 'ड्रैगन' जैसा था. जब झंडा लहराता तो लगता कि ड्रैगन अपनी जीभ लपलपाकर आगे बढ़ रहा है. चीनियों को विश्वास था कि इससे दुश्मन डरकर भाग जाएगा. 10वीं शताब्दी आने तक विभिन्न राष्ट्रों और उनकी सेनाओं के झंडे बन चुके थे. युद्ध में सेनापति और राजा दोनों के ही झंडे जाते थे. सेनापति का झंडा सेना के आगे रहता था, जबकि राजा का सेना के बीच में. राजा के झंडे की बहुत हिफाजत की जाती थी और किसी भी कीमत पर गिरने नहीं दिया जाता था. राजा का झंडा गिरने का अर्थ सेना की हार होता था. हर राष्ट्र के झंडे के पीछे कोई कहानी है या उस राष्ट्र विशेष से संदर्भ में कोई अर्थ है. जैसे ऑस्ट्रिया के सफेद पट्टी वाले लाल झंडे के पीछे एक रोचक कहानी यह है कि एक घनघोर युद्ध में ऑस्ट्रिया की सेना बुरी तरह पराजित हो गई. जो चंद सिपाही बचे थे, वे जान की बाजी लगाकर किसी तरह झंडे की हिफाजत करते रहे. आखिर में झंडा भी गिर गया. उसी समय खून से लथपथ एक सिपाही ने अपनी कमीज उतारकर लहरा दी. कमीज खून से रंगी होने के कारण पूरी तरह लाल थी, पर जहां उसने पट्टी बांध रखी थी, उस जगह सफेद पट्टी थी. आगे से ऑस्ट्रिया के झंडे को यही रूप दे दिया गया. रूस के झंडे पर बना हंसिया और हथौड़ा क्रमशः वहां के किसान और औद्योगिक मजदूरों का निशान है. अब तो ज्यादातर राष्ट्रों में झंडे से जुड़े कई कानून बन चुके हैं. झंडे की अवमानना या अनादर करने पर सजा का प्रावधान है.

स्पेस जर्नल

सूरज से आ रहा रेडिएशन हो सकता है नुकसानदायक

धरती के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के आसमान में एक रंगीन रोशनी अकसर दिखाई देती है, जिसे कहा जाता है **Aurora**. ये ऑरोरा तब बनते हैं जब सूरज से आने वाली चार्ज्ड पार्टिकल्स की हवाएं धरती के चुंबकीय क्षेत्र से टकराती हैं. सूरज से आ रहा रेडिएशन इंसानों और जीवन के लिए नुकसानदायक हो सकता है. ऐसे में चुंबकीय क्षेत्र धरती के सुरक्षा कवच के तौर पर काम करता है लेकिन एक नई स्टडी में इसे लेकर चिंता जताई गई है. स्टडी के मुताबिक, समय के साथ चुंबकीय क्षेत्र कमजोर होता जाएगा और सूरज से आ रहा तूफान और भी ज्यादा शक्तिशाली. इसका असर धरती पर मौजूद जीवन पर भी पड़ेगा.

मंथली नोटिसेज ऑफ द रॉयल ऐस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी में छपी स्टडी में ऐस्ट्रोनॉमर्स ने इन हवाओं की तीव्रता को कैलकुलेट किया है. इसमें देखा गया है कि आने वाले 5 अरब साल में इनका क्या होगा. तब तक सूरज का हाइड्रोजन ईंधन खत्म होने लगेगा और यह एक विशाल लाल तारा बनने लगेगा. इससे निकलने वाली हवाएं धरती के चुंबकीय क्षेत्र को खत्म करने लगेंगी और वायुमंडल स्पेस में खोने लगेगा. अगर तब तक जीवन धरती पर बचा होगा तो वहां से धीरे-धीरे खत्म होने लगेगा. आयरलैंड के ट्रिनिटी कॉलेज डबलिन के ऐस्ट्रोफिजिसिस्ट और स्टडी की सह-लेखक अलीन विडोटो ने बताया है कि पहले मंगल का वायुमंडल भी ऐसे ही खत्म हुआ था लेकिन उसमें धरती की तरह चुंबकीय क्षेत्र नहीं था.

क्या होगा सूर्य का?

अब से अरबों साल बाद हमारे सूरज का ईंधन खत्म हो जाएगा और सूरज अपने ही गुरुत्वाकर्षण में ढहने लगेगा. इससे बाहरी परतें फैलने लगेंगी और यह विशाल लाल तारा बन जाएगा. आखिर में यह पूरी तरह से खत्म होकर White Dwarf सितारे में तब्दील हो जाएगा. तब तक इसका वायुमंडल फैलने से रास्ते में आने वाले ग्रह जलने लगेंगे. NASA के मुताबिक, मरकरी और वीनस तो दोनों ही खत्म हो जाएंगे, हो सकता है धरती का भी वही हश्र हो. अपनी स्टडी में रिसर्चर्स ने 11 अलग-अलग सितारों के मॉडल तैयार किए, जिनके द्रव्यमान सूरज की तुलना में 1 से 7 गुना ज्यादा थे.

फिर बसेगा जीवन?

रिसर्चर्स को पता चला कि जीवन के आखिर में सूरज से निकलने वालीं हवाओं की गति और तीव्रता अलग होगी. इससे कोई ग्रह तभी बच पाएगा जब उसका चुंबकीय क्षेत्र बृहस्पति से 100 गुना ज्यादा और धरती से एक हजार गुना ज्यादा होगा. कुछ ऐस्ट्रोनॉमर्स का मानना है कि सफेद बौने सितारों का चक्कर काटने वाले ग्रहों पर भी जीवन हो सकता है क्योंकि सूरज की हानिकारक किरणें इस तक नहीं पहुंचेंगी. हो सकता है कि सूरज के वायुमंडल की गर्मी कोई ग्रह झेल न पाए लेकिन अगर कोई ऐसा ग्रह होता है जिसका चुंबकीय क्षेत्र शक्तिशाली हो, तो वहां नया जीवन पैदा भी हो सकता है.

फ्रूट फैक्ट

सोने से पहले खाएं 2 खजूर

ड्राई फ्रूट्स हमारी सेहत से जुड़ी कई प्रकार की समस्याओं के खतरे को कम करने के लिए खाने में इस्तेमाल किए खाते हैं. पौष्टिक तत्वों से भरपूर होने के साथ-साथ इनमें किसी भी प्रकार के केमिकल मिले होने का खतरा भी नहीं रहता है, जिसके कारण इनका सेवन और भी सुरक्षित माना जाता है. ऐसे ही एक खास ड्राई फ्रूट का नाम है खजूर, जो हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है. कई लोग इसका सेवन दूध के साथ भी करते हैं. यह सेहत से जुड़ी कई प्रकार की गंभीर बीमारियों के खतरे को हमारे शरीर से दूर रखने में मददगार साबित हो सकता है.

डायबिटीज का खतरा कम

शरीर में ब्लड शुगर लेवल की मात्रा अगर बढ़ जाती है तो इसके कारण इंसान बड़ी आसानी से डायबिटीज का शिकार हो जाता है. ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने के लिए खजूर में बेहतरीन गुण देखा गया है.

एंटीऑक्सीडेंट

एंटीऑक्सीडेंट क्रिया मुख्य रूप से चेहरे और शरीर की त्वचा को निखारने का कार्य करती है. इसके अलावा रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में भी एंटीऑक्सीडेंट क्रिया की भूमिका होती है.

हृदय रोगों का खतरा कम

दिल से जुड़ी कई प्रकार की बीमारियां हर साल भारत में ही लाखों लोगों की मौत का कारण बनती हैं. कार्डियक अरेस्ट, हार्ट अटैक के कारण बहुत बड़े पैमाने पर लोगों की मौत होती है, खजूर का सेवन करने के कारण हृदय रोगों का खतरा कई गुना तक कम हो जाता है. हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कंट्रोल करने के लिए खजूर में मैग्नीशियम और पोटैशियम की मात्रा काफी लाभदायक साबित होगी. जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर की समस्या परेशान करती है, वह घरेलू उपचार के रूप में 2 खजूर को एक गिलास दूध में मिलाकर इसका ड्रिंक तैयार कर लें.

चुटकुले

पप्पू बन गया

पप्पू (दोस्त से) : यार मेरे साथ धोखा हो गया...
दोस्त : क्यों, क्या हुआ?
पप्पू : यार घर से किताबों के लिए पैसे मंगाए थे, घरवालों ने किताबें ही भेज दीं!!!
▼▼▼▼▼▼

बदला

पत्नी ने गजोधर को समझाते हुए कहा...देखो, तुम्हारा दोस्त जिस लड़की से शादी कर रहा है, वह लड़की अच्छी नहीं है. आप उसे मना क्यों नहीं करते?
गजोधर : मैं क्यों मना करूं? उसने मुझे मना किया था क्या??
▼▼▼▼▼▼

हा..हा...हा

चमनलाल : एक बिजनेसमैन ने अपनी पत्नी को हीरे का हार उपहार में दिया और फिर उसके बाद पत्नी ने 6 महीनों तक उससे बात नहीं की!
पत्नी : क्यों? क्या हार नकली था?
चमनलाल : नहीं, दरअसल बिजनेसमैन ने हार दिया ही इसी शर्त पर था...!!!
▼▼▼▼▼▼

शांति की खोज

मास्टर जी : शांति कहां होती है?
बंटी : जिस घर में पति और पत्नी दोनों मोबाइल चलाते हैं...!!!
▼▼▼▼▼▼

तलाक दे दूंगी

पत्नी : सुनो जी, अगर आपके बाल इसी रफ्तार से झड़ते रहे तो मैं आपको तलाक दे दूंगी...!
पति : हे भगवान, मैं पागल इनको बचाने की कोशिश कर रहा था...!!!

हिलव्यू समाचार

hillviewsamachar@gmail.com

जयपुर >> सोमवार, 21 फरवरी, 2022

ज़िन्दा रखना है अपना स्वाभिमान

व्यक्तित्व विकास

ज्योति मेरी प्रिय स्टूडेंट रही है। मैं उसकी प्रतिभा से बेहद प्रभावित रहा हूँ। एक बार उसके घर के सामने से निकलते हुए मैंने कार उसके दरवाज़े पर रोक कर घंटी बजाई। दरवाज़ा खोला ज्योति ने, मुझे देखते ही उत्साह से अन्दर ले गई। ड्राईंगरूम थोड़ा अस्तव्यस्त सा था, शायद किचन में थी उसकी मम्मी, जो ज़ोर ज़ोर से किसी को डांट रही थी। फटाफट ज्योति ने सोफे पर से कपड़े हटा कर मेरे बैठने के लिये जगह की ओर तेज़ी से दौड़ते हुए अन्दर जाकर अपनी मम्मी को चुप कराया। थोड़ी झेंपती हुई, ट्रे में पानी का गिलास लिये वह आई। मैंने पानी पिया और बोला, ''इधर से गुज़र रहा था, सोचा तुमसे मिलता चलूं। अच्छा मुझे ज़रूरी काम है।'' मैंने उठने की कोशिश की। वह बोली, ''सर यह कैसे हो सकता है। आप पहली बार घर में आए हैं, चाय पीकर जाइयेगा।'' वह फ़िर तेजी से अन्दर गई। कुछ परेशानी में सिर झुकाये वह आई, ''सर, मैं पास से ही दूध लेकर आती हूँ, एक मिनट ठहरियेगा।''

मैंने खड़े होकर मुस्करा कर उसकी तरफ देखा, ''नहीं, मैं वक़्त का बड़ा पाबन्द हूँ, तुम जानती हो। कोई मेरा इन्तज़ार कर रहा है।'' यह कह कर मैं वहाँ से रवाना हो गया। बिना सूचित किये जाना ग़लती मेरी थी।

दूसरे दिन कॉलेज में वह बड़ी मायूस, उदास सी नज़र आई। मैंने उससे उदासी का कारण पूछा, ''सर आप क्या सोच रहे होंगे, चाय तक तो नहीं पी।'' मैंने उससे अगले दिन घर आने को कहा तो वह खिल उठी।

नियत समय पर जब मैं घर पहुँचा तो उसके पिताजी ने दरवाज़ा खोला। ड्राईंगरूम एकदम साफ़ सुथरा, बिलकुल बदला हुआ नज़र आया। सलीकेदार साड़ी पहने मुस्करा कर उसकी मम्मी ने मेरा स्वागत किया। बहुत सारा आत्मविश्वास लिये पानी, चाय से स्वागत करती हुई ज्योति उस दिन बेहद खुश थी।

मैंने अगले दिन उसे कॉलेज से चहकते हुए पाया। वह सहेलियों को गर्व से बता रही थी कि कल सर घर आये थे।

मैंने उससे कहा, ''आज बहुत खुश हो ज्योति? उस दिन उदास थी, क्योंकि मैं अचानक, बिना बुलाए तुम्हारे घर पहुँच गया था? क्यों यही बात है ना? सहेलियों को पिछले दिन का नहीं बताया था।''

उसने सहमति में सिर हिलाया।

''वास्तव में चाय बहुत अच्छी बनी थी।'' तुम्हारे मम्मी, पापा भी बहुत अच्छे हैं। मक़ान भी कितना साफ़ सुथरा, विशाल ब[ना हुआ है। लेकिन...।'' मैं चुप हो गया।

''लेकिन क्या सर?'' उसकी और सारी सहेलियों की प्रश्न भरी निगाहें मुझसे पूछ

रही थी।''

''तुम्हारे घर के वातावरण, मेहमाननवाज़ी को तो शत प्रतिशत अंक, लेकिन घर के बाहर देख रही थीं? सारा घर का पानी सड़क पर आ रहा था, कितना कीचड़ जमा था, सूअर गन्दगी फैला रहे थे। क्या सड़क या घर का बाहर हमारी ज़िम्मेदारी नहीं? हम कहते हैं मेरा भारत महान। लेकिन कभी ग़ौर किया है, यह क़ोशिश की है कि देश को महान बनाने में हमारा कितना योगदान है?'''

''बस, ट्रेन, सार्वजनिक स्थल, बाग, बगीचे में से वापस आते हुए तुमने मुड़ कर कभी देखा है कि वहां साफ़ सुथरा वातावरण है या कागज़, गन्दगी, जूठन, प्लास्टिक, कचरा हम छोड़ कर आ रहे हैं?''

''ज़रा सा तुम्हारा घर अस्तव्यस्त था, तुम्हारी गर्दन नहीं उठ पा रही थी। विदेशी जब हमारे देश में कदम रखते हैं, हवाई अड्डों रेल्वे स्टेशन, बस स्टॉप से बाहर निकलते ही जो गन्दगी, अस्तव्यस्त नज़ारे उन्हें नज़र आते हैं, तो क्या हमारी निगाहें शर्म से नहीं झुकती। आख़िर किस बात पर हम इतराते हैं, मेरा भारत महान्। कौन सा कर्म हम इस देश को महान् बनाने में कर रहे हैं? जिस भावना से हम हमारी वस्तु का ध्यान रखते हैं, क्या सार्वजनिक स्थल व साधनों को भी रखने का प्रयास करते हैं।''

हम निडर क्यों हैं?

बीना जंक्शन पर लगभग आधा घंटा ट्रेन रुकती है। मैं खाना खाकर प्लेटफार्म पर चहलक़दमी कर रहा था। दस बाहर नौजवान लड़के लड़कियाँ घेरा बनाकर हंसी मज़ाक कर रहे थे और केले खाकर छिलके प्लेटफार्म पर ही डालकर एक तरह से रेलवे प्रशासन और अनुशासित लोगों को चिढ़ा रहे थे। देखने में सभी अच्छे परिवार के थे।

मैं व्यवस्था में भागीदार नहीं बना। मैं उनके घेरे के बीच चला गया और एक एक छिलके को पांव से धकेल कर पटरियों पर डालने लगा। उनकी हंसी मज़ाक और तेज होने लगी। वे उसी तरह छिलके फेंकते रहे, मैं पांव से सरकाता रहा। यह एपिसोड तब तक चलता रहा, जब तक कि उरके केले ख़त्म नहीं हो गये और मैंने उस आख़िरी छिलके को नीचे नहीं फेंक दिया।

सैकड़ों मुसाफ़िर इस तमाशे को अपनी आँखों से देख रहे थे।

कौन था इस घटना का ज़िम्मेदार? वह नौजवान पीढ़ी, मैं, रेलवे प्रशासन, कानून।''

ना वो ज़िम्मेदार थे, ना मैं, ना रेलवे प्रशासन। ज़िम्मेदार थीं, हमारी व्यवस्थाएं, हमारी नैतिकता। छिलके तो बहुत छोटी चीज़ हैं, हमारे देश में तो ज़रा सा आंदोलन ही पलक झपकते सरकारी सम्पत्तियों, रेल, बस आदि को आग के हवाले करने का माध्यम बन जाता है। कितनी आसानी से राष्ट्रीय सम्पत्ति को लोग बर्बाद कर देते हैं और नारा लगाते हैं, ''मेरा भारत महान्।''

लोगों का नज़रिया स्वयं की सम्पत्ति के लिये अलग होता है और दूसरों की या देश की सम्पत्ति के लिये दूसरा हो जाता है।

क्यों होता है यह फर्क? क्यों ऐसी निडरता? लोगों में डर की वज़ह निम्न होती है।

धर्म, मज़हब का डर : कोई इन्सान यदि धर्म से डरता है तो कोई भी अच्छा, बुरा काम करने से पहले वह पाप, पुण्य की बात सोचेगा।

समाज का डर : समाज से डरने वाला चौकन्ना रहेगा कि ग़लत काम करते उसे कोई देख तो नहीं रहा है।

कानून का डर : कानून की ग़िरफ़्त में आने से हर कोई बचना चाहता है।

अपने अंज़ाम का डर : एक से दूसरी सिगरेट जलाने वाले (चैन स्मूकर)को जब डॉक्टर बताता हैकि तुम्हें कैंसर हो गया है। अपनी जान बचाने के लिये वह तुरन्त सिगरेट छोड़ देगा। वरना सिगरेट के पैकिट पर लिखी इस इबारत से आज तक किसने सिगरेट नहीं पीने की शिक्षा ली है कि ''धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।''

कानून की पालना करने के मापदण्ड अलग अलग व्यक्तियों में अलग अलग होते हैं। यह सच है कि कानून से हर कोई डरता है, लेकिन वे लोग नहीं इसकी गिरफ़्त में आ गये हैं। जो देश की अदालतों, कानून प्रक्रिया से एक बार गुज़र चुके हैं। वो जान चुके हैं कि हर गुनाह के बावजूद कानून की लचर गलियाँ उनका बाल भी बांका नहीं होने देंगी।

बड़े से बड़ा गुनाह कर लो, करोड़ों रुपये डकार जाओ, किसी का भी गला काट लो, पुलिस गिरफ़्तार भी कर लेगी तो क्या फ़र्क पड़ता है। कुछ दिनों में ज़मानत पर बाहर आयेगा और समाज को और ज्यादा भ्रष्ट करेगा। यही कमज़ोरी हमारे देश में पतन का सबसे बड़ा कारण है।

न्याय में देरी, लालफीताशाही, गैर ज़िम्मेदारी, भ्रष्टाचार, लापरवाही के कारण हर कोई निडर, भ्रष्ट, असभ्य बनता जा रहा है।

मेरे एक पुलिस अधिकारी मित्र का कहना है कि किसी गुनाहगार को हम थाने में थर्ड डिग्री इस्तेमाल कर जो सज़ा देते हैं, बस वही सजा है। एक बार ज़मानत पर बाहर आने के बाद उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

इन सभी बातों का सार यह है कि जो व्यक्ति धर्म, समाज, कानून और स्वयं के अच्छे, बुरे से ऊपर उठ कर फ़ैसला करता हो, अपने हर काम को करने से पहले नैतिकता, ग़ैरत की बात दिल दिमाग़ में रखता हो, वह हर्गिज इस तरह का काम नहीं करेगा जो धर्म के लिहाज से पापी कहलाये। समाज की निगाहों में गिरने वाला हो। कानून की निगाह में अपराधी हो, और अपनी ही निगाहों में अपनी ही निगाहों में अपनी ही अन्तर्रात्मा में उसका स्वाभिमान कमज़ोर हो जाये।

मन चंगा तो कठौती में गंगा

बहुत पहले जनश्रुति के रूप में यह कथा सुनी थी। बात बहुत पुरानी है। कहते हैं एक बहुत ही क्रूर सास थी जो अपनी बहू को बहुत सताती थी। ना उसे अच्छा पहनने को देती,ना अच्छा खाने को देती, न ही कहीं आने-जाने की अनुमति देती। परन्तु बहु बहुत धार्मिक स्वभाव की थी। अपनी सास के द्वारा सताए जाने पर भी उनकी सेवा करती, पूरे परिवार की देखभाल करती और वह मानती थी कि कर्तव्य पालन सबसे बड़ा धार्मिक उत्सव है। वह सदा कहती थी सभी से 'मेरा मन साफ है, मैं अपने कर्तव्य का पालन करती हूँ, तो ईश्वर मुझ पर सदा प्रसन्न रहेंगे। मन चंगा तो कठौती में ही गंगा आ जाती है।'

एक बार की बात है कार्तिक पूर्णिमा के समय सासू जी ने गंगा नहाने का कार्यक्रम बनाया और वह बहू को अपने साथ में नहीं ले गई। बहू को कहा...'तू घर में ही नहा ले। तेरा मन तो चंगा है ना, तुझे फिर क्या चिंता गंगा जाने के लिये ? गंगा बहुत दूर है, तेरी कठौती में तो गंगा रहती है ना, तू अपनी कठौती के गंगा से स्नान कर लेना।'

निर्मला कर्ण, राँची, झारखण्ड

सासू माँ अन्य कई लोगों के साथ में चली गई कार्तिक पूर्णिमा में गंगा स्नान को। कार्तिक पूर्णिमा में गंगा स्नान के लिये दूर-दूर से लोग आए थे। बड़ा मेला लगा था। मेले में भीड़ बहुत अधिक थी। उसी भीड़ में सासू मां अपने बाकी साथियों के साथ गंगा नदी में प्रविष्ट हुई स्नान के लिए। स्नान के बाद ऊपर आई और कपड़े बदलने के बाद देखा तो उनके गले की सोने की जंजीर गायब थी।

अब तो परेशान हो गई वह। खोज-खोज कर वह परेशान हो गयी। नहाने के पहले तो गले में ही थी। क्या गंगा नदी में गिर गयी। सबने मिलकर खोजने का प्रयास किया परंतु जंजीर नहीं मिलनी थी, नहीं मिली। बहुत दुःखी होकर सासू मां वापस आ रही थी। चिंतित हो सोच रही थी।

'यह क्या हो गया, क्या गंगा माँ ने उनके धर्म को नहीं स्वीकार किया, उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं किया, उनकी जंजीर गंगा नदी में गिर गई। उनके सभी साथियों ने उन्हें बहुत समझाया। परंतु वे दुःखी ही रही।

वापस आने के बाद बहू ने उनका हुलास के साथ स्वागत किया। सासू मां दूर सफर से आयी हैं थक गयी होंगी सोच कर उनके पाँव भी दबायी और उन्हें गर्म ताजा भोजन बनाकर खिलाया। पूरे नियम का पालन किया। कई प्रकार के पकवान बनाये। तीर्थ से वापसी के बाद बड़ी खाया जाता है, इसलिए बहू ने बड़ी भी बनाया था और सासू मां को खिलाया। परंतु सासू मां को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

उन्हें उदास देख बहू ने उनसे पूछ लिया- 'क्या मां आप तीर्थ करके आयी हैं - गंगा स्नान करके,फिर इतनी दुःखी क्यों हैं। आपको तो प्रसन्न होना चाहिए कि आप पुण्य कमाकर आयी हैं। लेकिन मैं देख रही हूँ, आपके चेहरे पर दुःख का घना साया है,ऐसा क्यों'?

सासू मां ने कहा - क्या कहूं वहां गंगा स्नान करते समय मेरी सोने की जंजीर गंगा नदी में ही गिर गई। बहुत ढूंढा परंतु नहीं मिली,बड़ी हानि हो गयी। सोना खोना अच्छी बात नहीं है,बुरा होता है। इसलिए मैं उदास हूँ।

बहुत झट उठकर अपने कमरे में गयी और वापस आकर उनके हाथों में सोने की जंजीर पकड़ा दी- 'मां कहीं यह जंजीर तो नहीं है आपकी?

सासू मां आश्चर्यचकित - 'बहु यह तुम्हारे पास कैसे आयी ? मैं घर में तो भूली ही नहीं, इसे पहन कर गई थी। वहां देखा भी था स्नान के पहले, मेरे गले में ही थी यह जंजीर। फिर तुम्हारे पास कैसे आ गयी यह,किसने लाकर तुम्हें दिया?

बहु मुस्कुराई - 'पता नहीं, मैं नहीं जानती मां कि मेरे पास कैसे आ गयी। मैं तो कठौती में जल लेकर पूर्णिमा के दिन स्नान करने के लिए बैठ गयी। जब नहाने लगी तो मुझे उसमें यह जंजीर मिली। मुझे आश्चर्य लगा, इसलिए मैंने इसे रख दिया कि आप से पूछूंगी जंजीर आपकी है क्या, क्योंकि यह मेरी जंजीर नहीं थी।

सासू माँ ने अपनी बहू को प्यार से अपने गले लगा लिया और कहा- 'तुम्हारी पवित्र भावना के वशीभूत होकर सचमुच गंगा माँ तुम्हारी कठौती में आ गयी थीं। तुम धन्य हो बहु।'

उस दिन से सासु मां का हृदय परिवर्तन हो गया और वह अपनी बहू को बहुत प्यार देने लगी।

कोल संकट के बावजूद निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिए सभी संभावित विकल्पों पर बन रही है कार्ययोजनाः एसीएस ऊर्जा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। ऊर्जा विभाग अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल ने कहा है कि राज्य में छत्तीसगढ़ में कोल माइनिंग अनुमति में हो रही देरी के कारण आसन्न कोल संकट के बावजूद प्रदेश में विद्युत आपूर्ति की सुचारु व्यवस्था बनाए रखी जाएगी। उन्होंने बताया कि इसके लिए तात्कालीक व दीर्घकालीक कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

एसीएस ऊर्जा डॉ. सुबोध अग्रवाल ने शुक्रवार को विद्युत भवन में चेयरमैन डिस्काम्स भास्कर ए सावंत, सीएमडी विद्युत उत्पादन निगम आरके शर्मा सहित संबंधित अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक में सभी संभावित विकल्पों पर विचार विमर्ष किया।

डॉ. अग्रवाल ने बताया कि छत्तीसगढ़ की कोयला खदानों में खनन की स्वीकृति मिलने में हो रही देरी को देखते हुए मुख्यमंत्री अषोक गहलोत गंभीर है और स्वयं के स्तर पर नियमित समीक्षा के साथ ही ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी और अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल को स्वयं दिल्ली जाकर केन्द्र सरकार के समक्ष प्रभावी तरीके से राजस्थान का पक्ष

रखने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री गहलोत ने छत्तीसगढ़ सरकार से भी समन्वय बनाकर इसका जल्दी से जल्दी हल निकालने के प्रयास करने को कहा है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने स्पष्ट कहा है कि निर्देश मे बिना किसी व्यवधान के बिजली की आपूर्ति बनाए रखी जाए।

गौरतलब है कि ऊर्जा राज्य मंत्री भंवर सिंह भाटी और एसीएस अग्रवाल ने बुधवार और गुरूवार को दिल्ली में केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह, केन्द्रीय रेल्वे मंत्री अश्विनी वैष्णव, कोल सचिव अनिल कुमार जैन व अतिरिक्त सचिव कोल श्री विनोद तिवारी सहित कोल व रेल्वे के शीर्ष अधिकारियों के साथ विस्तार से चर्चा कर राजस्थान में कोयला संकट के कारण आसन्न कोयला संकट को देखते हुए विस्तार से राज्य का पक्ष रखा या केन्द्र सरकार से प्रदेश को कोल इंडिया से अतिरिक्त कोयला आवंटित करने, वैकल्पिक खदान से कोयला उपलब्ध कराने, रेल्वे की रैक की उपलब्धता बढ़ाने सहित विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। केन्द्र सरकार स्तर पर उच्च स्तरीय चर्चा सकारात्मक रही है और केन्द्र सरकार ने सभी संभावित विकल्पों पर सहयोग का विश्वास दिलाया है।

एसीएस ऊर्जा डॉ. अग्रवाल ने बताया कि छत्तीसगढ़ से राज्य सरकार की खानों पर खनन शुरू करने की स्वीकृति में देरी के कारण प्रदेश में कुल 7580 मेगावाट के तापीय विद्युत गृहों में से 4340 मेगावाट के विद्युत गृहों में विद्युत उत्पादन प्रभावित होने की संभावाना है। उन्होंने बताया कि इसके लिए छत्तीसगढ़ में खनन स्वीकृति जारी होने व खनन आरंभ होने तक अन्य खदानों से कोयला आपूर्ति कराने, विदेशों से प्राथमिकता से प्रदेश को कोयला की मंगवाने, अन्य प्रदेशों से बिजली खरीद अनुबंध सहित सभी विकल्पों पर एक साथ काम शुरूवार कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि विदेशों से कोयला आयात के लिए राज्य सरकार स्वयं के स्तर से खरीद संभावना के साथ ही केन्द्र सरकार द्वारा सुझायेनुसार एनएसपीसी/एनटीपीसी से भी समन्वय बनाया जा रहा है ताकि राज्य के तापीय विद्युत गृहों के लिए जल्दी आयातीत कोयला मिल सके। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही प्रदेश के निजी क्षेत्र के विद्युत उत्पादकों से भी प्रदेश में अधिक बिजली प्राप्त करने के लिए प्रयास शुरूवार कर दिए गए हैं। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि राज्य में आसन्न कोल संकट के दौरान सभी संबंधितों से समन्वय कर संभावित विकल्पों की कार्ययोजना तैयार करने व कोआर्डिनेशन के लिए ऊर्जा विकास निगम के निदेशक पीटी प्रवीण स्वरूप सक्सैना को ओएसडी बनाया गया है। सक्सैना नियमित समीक्षा कर राज्य सरकार को प्रगति से अवगत कराएंगे।

उच्च स्तरीय बैठक में चेयरमैन डिस्काम्स भास्कर ए सावंत, सीएमडी विद्युत उत्पादन निगम आरके शर्मा, पीएस ऊर्जा मंत्री रणवीर सिंह, निदेशक पीटी ऊर्जा विकास निगम पीएस सक्सैना, निदेशक विद्युत उत्पादन निगम आरके सोरल, उत्पादन निगम के मुख्य अभियंता देवेन्द्र श्रृंगी, वित्तीय सलाहकार संदीप धीर, गोपाल विजय सहित अन्य अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

डॉ. भंडारी बने आरयूएचएस के नए कुलपति

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के फिजीशियन और एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसीपल डॉ. सुधीर भंडारी को सरकार ने राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय (आरयूएचएस) के कुलपति की भी जिम्मेदारी सौंप दी। राज्यपाल कलराज मिश्र ने आज आदेश जारी करते हुए डॉ. भण्डारी को 5 साल या उनकी 70 वर्ष की आयु जो पहले होगी तब तक के लिए नियुक्त किया है। डॉ. राजाबाबू पंवार के रिटायर्ड होने के बाद इस साल जनवरी में भंडारी आरयूएचएस के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार सौंपा था। डॉ. पंवार 12 साल तक आरयूएचएस के वाइस चांसलर के पद पर रहे। उन्हें सरकार ने दो बार एक्सटेंशन दिया गया। भंडारी के चयन में सीनियरिटी और प्रशासनिक अनुभव को भी दरकिनार किया गया है। भाजपा की सरकार रही हो या फिर कांग्रेस की हर सरकार में दोनों को नजदीकी का फायदा डॉ. भंडारी को मिला। इससे पहले अक्टूबर 2018 में जब डॉ. भंडारी को एसएमएस का प्रिंसीपल बनाया गया था तब भी कई सीनियर डॉक्टर्स के अनुभव को दरकिनार किया था।

दो बार प्रिंसीपल पद पर मिल चुका है एक्सटेंशनः डॉ. भंडारी को भी एसएमएस के प्रिंसीपल पद पर दो बार एक्सटेंशन मिल चुका है। हालांकि अब सवाल है कि डॉ. भंडारी को वीसी बनाने के बाद भी क्या जून माह तक एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसीपल पद पर सरकार बनाए रखेगी या फिर किन्हीं दूसरे डॉक्टर्स को मौका देगी।

पर्यटन विभाग की समीक्षा बैठक

आगामी मेलों और उत्सवों का वृहद स्तर पर करें प्रचार-प्रसारः पर्यटन मंत्री

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह ने कहा कि पर्यटन एक महत्वपूर्ण सेक्टर है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इसकी अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा कोविड की पाबंदियों को हटा दिया गया है। विभाग आगामी मेलों और उत?सवों को देखते हुए इसकी प्रभावी विस्तृत रूप रेखा तैयार करे। साथ ही मीडिया कैम्पेन एवं सोशल मीडिया के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार भी करें। सिंह शुक्रवार को पर्यटन भवन में विभागीय अधिकारियों के साथ विभागीय कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में विभाग से सम्बंधित कार्यों की प्रगति, पर्यटन के आगामी मीडिया कैम्पेन की प्रभावी ब्राडिंग, RDTM के आयोजन की तैयारियों, जैसलमेर में बॉर्डर टूरिज्म की प्रगति, आगामी मेलों और उत्सवों की तैयारियों पर चर्चा

की गई। साथ ही 30 मार्च को 'राजस्थांन दिवस' की तैयारियों पर भी विस्तीर से चर्चा हुई। बैठक में पर्यटन विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़, पर्यटन निदेशक निशांत जैन, संयुक्त सचिव दिनेश जांगिड, संयुक्त निदेशक आनंद त्रिपाठी, राजेश शर्मा, डॉ. पुनीता सिंह, सुश्री सुमिता सरोच, पवन जैन सहित अन्या अधिकारी भी उपस्थित रहे।

आर्थिक मज़बूती के लिए किसान का उद्यमी बनना जरूरीः अध्यक्ष, राजस्थान राज्य कृषि उद्योग बोर्ड

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। राजस्थान स्टेट एग्रो इंडस्ट्रीज डवलपमेंट बोर्ड के नवनियुक्त अध्यक्ष रामेश्वर डूडी ने शुक्रवार को यहां पंत कृषि भवन में बोर्ड अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। इस अवसर पर डूडी ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था खेती पर टिकी हुई है। जब काश्तकार मजबूत होगा तभी हमारा देश एवं प्रदेश सशक्त होगा और विकास की नई ऊंचाइयों को छूएगा। इसके लिए किसान का उद्यमी बनना जरूरी है। काश्तकार के उत्पादों का मूल्य संवर्धन हो और उन्हें जिंसों का उचित मूल्य मिले तभी उनकी आय में इजाफा होगा और वह आर्थिक रूप से मजबूत बन सकेंगे। उन्होंने कहा कि वह गांव की चौपाल तक पहुंचकर किसानों के साथ संवाद करेंगे, उनकी समस्याएं जानेंगे और उनका समाधान कर उन्हें उद्यमी बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर >> सोमवार, 21 फरवरी, 2022

जीने की वज़ह

लघु कथा

अर्विना गहलोत
उत्तर प्रदेश

सुबह वृद्धाश्रम पहुँच कर सारी कार्यवाही पूरी कर के बेटा बहू जाने लगे तो हतप्रभ सा पोता बोला माँ दादाजी को भी साथ ले चलो, सुनते ही बहू उसका हाथ पकड़ कर घसीटते हुए ले जाने लगी। पोते की आँखो में आंसू देख कर मेरा मन व्यथित हो गया। बेटा मुझसे बिना कुछ कहे विदेश जाने के लिए एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गया।

जब अपने ही पत्थर दिल हो गए तो ग़ैरों से क्या शिकवा करे?

मुझे यहाँ आए अभी कुछ ही घंटे बीते हैं, पर लगता है मुस्कुराए हुए जैसे सदियाँ बीत गई। ज़िन्दगी के ये आख़िरी लम्हे अपनो के बिना ही बिताने होंगे।

जाते हुए पोते का आँसुओं से भरा चेहरा ज़हन में रह -रह कर एक टीस पैदा कर रहा था।

इस ख़्याल को झटक कर नज़रें कमरे का मुआइना करने लगी।

कमरे में एक कोने में पुराना घड़ा मुहँ चिढ़ाता सा रखा था अब से यही गर्मी में प्यास बुझाने का एक मात्र साधन है।

सिर के ऊपर एक पंखा इस कदर खड़ खड़ा रहा था मानो उसकी साँसे उखड़ रही हों। खिड़की के बाहर झाँकने पर आश्रम के सामने उन्हें पार्क दिखाई दिया। कमरे से निकल कर पार्क में टहलने लगे। कुछ देर टहलने के बाद एक बैंच पर बैठकर आँख बंद कर सुस्ताने लगे। तभी एक बच्चा उनके पास आया और नन्ही कोमल उंगलियों से छू कर कहने लगा क्या आप मेरे दादाजी बनेंगे?

तंद्रा भंग हुई तो सर उठा कर देखा एक प्यारा-सा बच्चा खड़ा उनकी तरफ मुस्कुराते हुए निहार रहा है।

क्यों नहीं ज़रूर हम तुम्हारे दादाजी बनेंगे? आज से मुझे एक जीने की वज़ह मिल गई, एक नई स्फूर्ति का अनुभव हुआ।

क्या हुआ जो अपने छोड़ कर चले गए?

आज तुमने मेरे अंदर फिर से जीने की ऊर्जा का संचार किया है ।

बच्चे से हर रोज़ मिलने का वादा कर एक नई स्फूर्ति के साथ कमलकांत के कदम आश्रम की ओर बढ़ गये।

काव्य कोना

समय की महिमा

अज़ब समय की चाल है देखो,
हाथों से फिसलती जैसे रेत है।
साथ हो ग़र तो जीवन सुखमय,
रूठे तो लगे कि बंजर खेत है।।
पलक झपकते हाल बदल दे,
ईश्वर भी होते नतमस्तक।
इसकी गाथा से अटी पड़ी है,
पुराण ग्रंथ इतिहास की पुस्तक।।
किसने सोची होगी यह बात,
बनकर बैरी आई थी रात।
बनते राजा जो अगले दिन में,
भटके चौदह बरस वो वन में।।
चौसर लेकर समय था आया,
बचा न कुछ भी राज पाठ।
भाई बने आपस में दुश्मन,
मचा युद्ध और रक्तपात।।
आर्यावर्त के थे महाराणा,
जिनका प्रताप राष्ट्र ने माना।
काटते जो शत्रु की बोटी,
खानी पड़ी घास की रोटी।।
ऐसा नहीं कि सिर्फ़ बुरा है,
ये समय अपने में ख़रा है।
खुशियां भी इससे मिली है,
बहुतों की तक़दीर खिली है।
घनानंद का पाप बढ़ा तो,
समय ने गुरु चाणक्य चुना।
जंगल का इक आम युवा तब,
चंद्रगुप्त सम्राट बना।।
बढ़ा प्रकोप था मुगलों का जब,
समय की सीख दी जीजा माँ ने।
लाए स्वराज तब वीर शिवाजी,
गौरव सारा भारत माने।।
समय बदलते देर ना लगती,
कारण है ये तथ्य विशेष का ।
चाय बेचता एक युवा जब,
महामात्य होता है देश का ।।
गया समय ना वापस आता,
आते हुए का नहीं है भान।।
अभी जो पल है पास आपके,
जियो उसी में बन 'नादान'।।

तुषार शर्मा 'नादान' छत्तीसगढ़

दूरियाँ

रमा भाटी

दूरियों से दूरी नहीं बढ़ा करती
वह अपनों को और क़रीब लाती है ज़नाब।
जब कोई अपना दूर रहकर भी
पास होने का एहसास कराए जनाब।
दो ज़िस्म चाहे दूर हों लेकिन
चाहतें कभी ख़त्म नहीं होती ज़नाब।
यह ज़रूर है कि बाट जोहते हैं नयन
फिर आँखों में सपने भी संजोते हैं जनाब।
त्यौहारों पर दूरी खलती है उनकी
लेकिन आगे बढ़ फर्ज निभाते हैं ज़नाब।
यह रिश्ते होते ही हैं इतने ख़ास
दूर होने पर और प्यार बढ़ता है ज़नाब।
दिलों में दूरियां ना हो कभी बस
फिर रहें चाहे सात समुंदर पार जनाब।

रचनाकार अंतरराष्ट्रीय संस्था की कर्नाटक इकाई का भव्य उद्घाटन

हिलव्यू समाचार

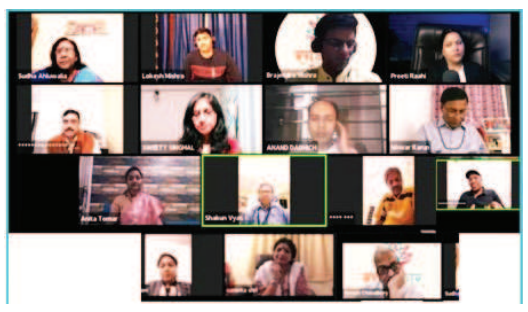

जयपुर। 13 फरवरी 2022 को अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान रचनाकार की कर्नाटक इकाई का भव्य उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता चैन्नई से वरिष्ठ साहित्यकार श्री ईश्वर करुण जी ने की। शुभलाभ पत्रिका, बैंगलोर के संपादक श्री राजेन्द्र शेखर व्यास जी ने मुख्य अतिथि और बंगलोर के वरिष्ठ गीतकार श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ जी ने विशिष्ट अतिथि के पद पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बड़ाई। कार्यक्रम का श्रीगणेश महिमा सोनी ने सिद्धिविनायक की नृत्य वंदना के साथ किया। प्रीति राही ने सुमधुर कंठ से माँ शारदे का पटल पर आह्वान किया। रचनाकार के संस्थापक अध्यक्ष श्री सुरेश चौधरी जी ने बीज वक्तव्य से कार्यक्रम को नई दिशा प्रदान की। राजेंद्रशेखर व्यास, ईश्वर करुण, ज्ञानचंद मर्मज्ञ ने अपने आशीर्वचनों से नवगठित इकाई को बधाई और भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कर्नाटक इकाई की अध्यक्षा श्रीमती सुधा अहलूवालिया ने नवगठित इकाई के मनोनीत पदाधिकारियों और कार्यकारणी सदस्यों का परिचय कराया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें सुधा अहलुवालिया,अमृता श्री, स्वीटी सिंघल, रजनीकांत झा, आनंद दाधीच, अनिता तोमर, लोकेश मिश्रा, चित्तरंजन चौहान, प्रीति राही, श्रीलता सुरेश, राही राज, चिलुका पुष्पलता, सुरेश चौधरी, महिमा सोनी, ज्ञानचंद मर्मज्ञ, ब्रजेन्द्र मिश्रा और ईश्वर करुण ने अपनी हृदय स्पर्शी काव्य प्रस्तुतियों से काव्य संध्या को रसमयी बना दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कर्नाटक इकाई के उपाध्यक्ष श्री ब्रजेन्द्र मिश्रा ने किया। केंद्रीय समन्वयक श्रीमती महिमा सोनी ने धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम का समापन किया । दर्शकों और श्रोताओं ने भी रचनाकार कर्नाटक ईकाई को शुभकामनाएं प्रेषित कीं।।

साकार फ़लक
जयपुर

कुण्डली

चुनावी त्यौहार

कहते हैं लोकतंत्र में, होता चुनाव त्यौहार
लेकिन लगता है उन्हें, वोटर का बाज़ार।
वोटर का बाज़ार, चुने जब नेताजी जाते,
सत्ता पाने के लिए, खुद भी बिक जाते।
कहत 'फ़लक' कविराय, ये है ऐसा धंधा
मौसम कोई भी रहे, कभी ना होता मंदा।

हमारे प्यारे वन्य जीव : लॉयन

डॉ कविता माथुर

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

एक राज की बात बताऊँ बच्चों? जब मैं बहुत बहुत छोटी थी न्, मटर के दाने जैसी आँखों वाली , तब जिस एनिमल से सबसे पहले मेरा तारीफ कराया गया था न्, वो था लायन! यानी कि शेर। और ये मुलाक़ात हुई थी उन किताबों के ज़रिए, जो मेरे पापा जयपुर से मेरे लिए ख़रीद कर लाया करते थे, जिससे उनकी छोटी सी बिटिया बचपन से ही जानवरों से प्यार करना सीख ले, उनके बारे में जान ले , अपने आस-पास के भी और जंगलों के भी ! है न् कितनी अच्छी बात!

जो सबसे पहली तस्वीर मैंने देखी थी, उसमें शेर एक बैबून का शिकार करके खा रहा था । वो देख कर मुझे अच्छा नहीं लगा था । पर तब मुझे मेरे ग्रैंड पापा ने बताया था कि ये दुनिया 'जीव जीवस्य भोजनम् ' के सिद्धांत पर चलती है , जिसमें कार्निवोर्स दूसरे जानवरों को मार कर ही अपनी क्षुधा शांत कर सकते हैं । उनके लिये घास फूस नहीं बनी ।

ये लिखते हुए मुझे मेरे प्रिय लेखक रस्किन बॉड की बहुत सुंदर कविता याद आ रही है, जिसके बारे में मैं आपको अलग से बताऊँगी।

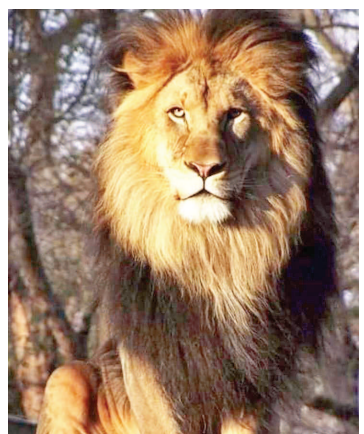

हमारे ईकोसिस्टम में 'हू -ईट्स-व्हाट्?' का बड़ा महत्व है । प्राणियों को जिंदा रहने के लिए एनर्जी की ज़रूरत होती है , जिसके लिये वो भोजन करते हैं। पेड-पौधे सनलाइट से एनर्जी लेते हैं; हर्बिवोर एनिमल्स पेड़ पौधों से ; जिन्हें कार्निवोर्स अपना भोजन बनाते है ; और फिर वो खुद अपने से बड़े आकार के मांसभक्षियों का आहार बनते हैं। इस रूट को हम ' फ़ूड-चेन' के नाम से जानते हैं। चूँकि जानवर ज़्यादातर एक से अधिक प्रकार के भोजन करना पसंद करते हैं , हमारे ईकोसिस्टम का ये फ़ूड चेन एक तरह का जटिल फ़ूड-वेब निर्मित करता है। है न कितनी इंट्रेस्टिंग बात ?

बच्चों, कुछ बिग कैट्स , जैसे चीता, शेर, पैंथर, टाइगर वग़ैरह को एक बार अपना आहार अच्छे से खाने के बाद कई दिनों तक शिकार करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। है न् ये भी मज़ेदार बात!

यूं नो , कि लायन्स हमेशा बीस से तीस के ग्रुप्स में रहते हैं जिसे 'प्राइड' कहा जाता है । हरेक प्राइड में कम से कम चार मेल लायन्स होते हैं और उनकी मेन्स (गर्दन के आस-पास के बाल) के डिफ़रेंस से उन चारों को अलग अलग पहचाना जा सकता है । जब प्राइड में पैदा हुए मेल-शावक दो साल के हो जाते हैं तो उनको उनकी मोम अलग कर देती हैं। और एक बहुत ही इंट्रेस्टिग बात बताऊँ आपको ? प्राइड में शेरनी ही शावकों के लालन-पालन से लेकर एक व्यवस्थित समूह में शिकार तक के सारे कामों की जिम्मेदारी लेती है जबकि जनाब शेर साहब आराम फ़रमाते रहते हैं । और शिकार के बाद शेरनियाँ तब तक खाना नहीं खातीं, जब तक उनके हस्बैंड्स , यानी कि शेर साहब भोजन नहीं कर लेते । और हाँ, कभी कभी शेरों में लड़ाई भी होती है और वो तब कर चलती है जब तक उनमें से कोई एक मर नहीं जाता ।

मौन

मौन महान नहीं होता
मौन समाधान नहीं होता
मौन में कायरता छुपी होती है
मौन में व्याकुलता छुपी होती है
मौन हक़ की बात नहीं करता
मौन सच से मुलाक़ात नहीं करता
सबसे चेहरा छुपाता है मौन
सवालों पर धूल उड़ाता है मौन
पर आज मौन को सुनना होगा कि
राष्ट्र को जीवित रखने के लिए
मौन की नहीं
आवाज़ की ज़रूरत होती है
एक ज़िंदा आवाज़ की ....।

डॉक्टर कल्याणी कबीर
जमशेदपुर, झारखंड

पापा की यादें

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

नज़र ढूँढती है राहों पर, पापा ज़ल्दी आओ ना।।
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना।
बैठे-बैठे रोते रहते, खाना नहीं भाता है।
प्यास लगे तब भी मुँह में जी, पानी नहीं पिलाता है।
आकर मुझको अपनी बाहों, झट से गले लगाओ ना।
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना।।
जब से इस दुनिया को छोड़े, साथ नहीं कोई देते।
पापा बिन हम कैसे जीते, ख़बर नहीं कोई लेते।।
रिश्ते क्या ऐसे होते हैं, थोड़ा सा समझाओ ना।
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा ज़रा बताओ ना।।
जब-जब हम राहों पर चलते, अपनी नज़र टिकाते हैं।
मदद माँगने जाते हैं तो, आँखे हमें दिखाते हैं।।
हम भी आगे बढ़ सकते हैं, नई सोच अब लाओ ना।
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना।।
मोल यहाँ पैसे का होता, करे उधारी अपने ही।
अपने ही पैसे माँगने को, पड़े भिखारी बनना ही।।
यहाँ सामना कैसे करना, आकर के समझाओ ना।
हमें छोड़ क्यों चले गये हो, पापा जरा बताओ ना।।

ऑनलाइन क्लासेज

अजय कुमार सिंह
भागलपुर(बिहार)

यह सर्वविदित है कि लगभग दो वर्षों से शिक्षण संस्थान बंद पड़े हैं। कुछ दिनों बाद ऑनलाइन क्लासेज शुरू हुए। एक सज्जन अपने गार्डन में बैठे मोबाइल चला रहे है। तभी उनकी टेबल पर तीन स्मार्ट फोन पड़ा देख एक आठ वर्षीय बच्चा रुका, उन्हें अदब से प्रणाम किया और बोला, अंकल क्या मैं आपसे दो मिनट बात कर सकता हूँ? उसकी मासूमियत पर उसे प्यार से अन्दर बुलाकर कहा, हां, हां,जो कहना है कहो। क्या ये सभी मोबाइल आपके है? हां, लेकिन क्यों? आप इनमे से एक मुझे कुछ दिनों के लिए दे सकते है?

इसे लेकर तुम क्या करोगे? हमारा ऑनलाइन क्लास होता है, मेरे पास मोबाइल नहीं है, मैं पढ़ाई नहीं कर सकता। मेरे पापा मज़दूरी करते हैं, वे मेरे लिए मोबाइल नहीं खरीद सकते। अभी तुमसे यह मोबाइल नहीं चलेगा, कुछ दिन बाद लेना। आप केवल पैटर्न बता दीजिए,बाकी मैं करके दिखाता हूँ। बच्चे की बातों से सज्जन बहुत प्रसन्न हुए। उससे कुछ पूछताछ की, मेधावी बच्चे ने हर प्रश्न का सहजता के साथ सही ज़वाब दिया।

तुम कहाँ रहते हो, मुझे अपना घर दिखा सकते हो? हां, क्यों नहीं? मैं पास की झुग्गी में रहता हूँ। बालक के पीछे पीछे सज्जन हो लिए और उसके घर तक पहुंचे। आप यहीं खड़ा रहिए अंकल, मैं मां को चाय बनाने बोलता हूँ, पापा काम पर निकले हैं। अन्दर से उसकी मां फटे पुराने किन्तु परिष्कृत कपड़ों में निकली और शिष्टता से उन्हे प्रणाम किया। वे सुविधाभोगी अपने दोनों लाडलों के बारे में सोचने लगे जो बदतमीज, अय्याश और नालायक हैं। उन्होंने उस निर्धन किन्तु मेधावी बच्चे को मोबाइल देने के साथ उसे गोद लेने का निर्णय लिया। एक जरूरतमंद बच्चे के ऊपर भगवान ने कृपा की। उसे आगे बढ़ने का ज़रिया मिल गया। औरत उनके सामने कृतज्ञ भाव से हाथ जोड़े खड़ी थी।

याद करें उन वीरों को

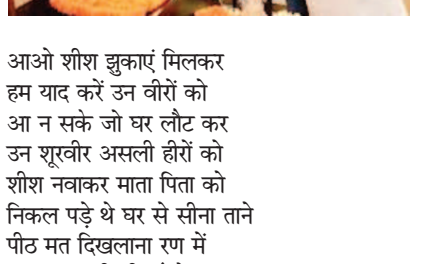

आओ शीश झुकाएं मिलकर
हम याद करें उन वीरों को
आ न सके जो घर लौट कर
उन शूरवीर असली हीरों को
शीश नवाकर माता पिता को
निकल पड़े थे घर से सीना ताने
पीठ मत दिखलाना रण में
यह बात कही थी माँ ने
छोड़ गए सब अपने पराये
वापिस आ न सके माँ हम
बेटी से गुड़िया का वायदा
जीते जी निभा न सके माँ हम
बापू के बुढ़ापे की लाठी
बनना था जिसे वह टूट गई
मुझसे जो उम्मीदें थी सबकी
कुदरत हमसे वह लूट गई
चलती बार मिली थी वो
आँखों में बिछुड़ने का गम है
एहसास मुझे भी हैं मेरी माँ
आज आँख सभी की क्यों नम हैं
रोना नहीं है आज समय है
दिल पर काबू पाने का
अच्छा माँ अब समय हो गया
अंत समय अब जाने का
मातृभूमि की रक्षा करते
जो कर देते अपने प्राण कुर्बान
लाखों दिलों में बसते हैं वो
होते हैं वो देश की शान।।

रवींद्र कुमार शर्मा
बिलासपुर (हि प्र)

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक पर्यावरण चुनौतियाँ!

जलवायु न्याय प्राप्त करने संसाधनों के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण सचेत और सुविचारित बनाम विचारहीन तथा विनाशकारी

वैश्विक स्तर पर हम कुछ दशकों से देख रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण, प्राकृतिक आपदाओं के दुष्परिणामों से हर देश प्रभावित हो रहा है। कहीं तूफान, भारी बारिश, भूकंप, आग, भूस्खलन जैसी अनेक प्राकृतिक आपदाओं की मात्रा में वृद्धि हुई है। हालांकि यह आपदाएं विपत्तियाँ सदियों पहले भी आती थी परंतु जिस तेज़ी से वर्तमान परिपेक्ष में इन विपत्तियों के दुष्प्रभाव नें पूरे विश्व के सामने आकर त्रासदी से नागरिकों को त्रस्त कर दिया हैं पहले शायद ही विश्व इस त्रासदी से इतनी गंभीर अवस्था से गुजरा हो।

साथियों बात अगर हम इस वैश्विक पर्यावरण चुनौतियों और जलवायु परिवर्तन की त्रासदी की करें तो इसकी जिम्मेदारी का श्रेय सृष्टि में सबसे बुद्धिमान प्राणी मानव को देने में अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि मानव की अपार अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और विकास के जुनून ने पर्यावरण का ऐसा गणित बिगाड़ा है कि उस के प्रकोप से मानव स्वयं विपत्तियों के घेरे में लिपट गया है। अब इस त्रासदी से बचने, तेजी से उपाय के ताने-बाने बुनने पर मानव मज़बूर हो गया है। ताकि इस सृष्टि को अपनी आने वाली अगली पीढ़ियों के लिए जीवन जीने योग्य सुरक्षित बचा सके।

साथियों बात अगर हम वैश्विक पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने की करें तो हमें जलवायु न्याय प्राप्त करने, संसाधनों के उपयोग के प्रति अपने दृष्टिकोण को उचित और सुविचारित करना होगा न कि विचारहीन और विनाशकारी। अगर हमें वैश्विक पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से मुकाबला कर इसका समाधान करना है तो पूरे विश्व के मनीषियों को पर्यावरण व जलवायु के वैश्विक नियमों, पेरिस जलवायु समझौते के अनुसार अपनीं जीवन शैली में परिवर्तन लाने, कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी लाने के अपने मजबूत प्रतिबद्धता और संकल्प को अति गंभीरता से निभाना निभाना होगा तभी हम इन प्राकृतिक चुनौतियों से मुकाबला करके समाधान कारक स्थितियों, परिस्थितियों में पहुंचने योग्य होंगे और अपनी अगली पीढ़ी को सुरक्षित जीवन प्रदान करने तथा अगली पीढ़ी के पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों के कड़वे सवालों के घेरे से बच पाएंगे।

साथियों बात अगर हम इस संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों, सम्मेलनों, वेबीनारों की करें तो पिछले दो सालों से कोरोना महामारी की गंभीर त्रासदी के बावजूद इस दिशा में वर्चुअल सम्मेलन के हस्ते सकारात्मक मंथन हुआ है। जिसमें ग्लास्गो कॉप-26, विश्व टिकाऊ विकास सम्मेलन 2022, पूर्व में पेरिस समझौता, ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टेरी) का सतत विकास शिखर सम्मेलन अभी हाल ही में हुए प्रयास है।

साथियों बात अगर हम ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) के 16 फरवरी 2022 को आयोजित एक वार्षिक प्रमुख कार्यक्रम टिकाऊ विकास सम्मेलन 2022 के 21 वें संस्करण की करें तो पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पीआईबी के अनुसार केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने अपने संबोधन में जोर देकर कहा कि जलवायु परिवर्तन सहित वैश्विक पर्यावरण चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हमें अब अनिवार्य रूप से समानता तथा समान लेकिन विभिन्न जिम्मेदारियों और संबंधित क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए सहमति प्राप्त वैश्विक नियमों पर कार्य करना चाहिए।

पेरिस समझौता के लक्ष्यों को तब तक अर्जित नहीं किया जा सकता है जब तक कि सभी देशों द्वारा वैश्विक कार्बन बजट के उचित हिस्से के भीतर रहते हुए इक्विटी को कार्यान्वित न किया जाए। हमारा लक्ष्य न्यायसंगत सतत विकास तथा जलवायु कार्रवाईयों में निष्पक्षता होनी चाहिए। केवल तभी 'जलवायु न्याय प्राप्त किया जा सकता है। पर्यावरण को बचाने की गहन आवश्यकता पर विचार करते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि हालांकि औद्योगिक क्रांति से देशों में समृद्ध आई है, पर इसके कारण पर्यावरण को भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा अर्थव्यवस्था पर महामारी के प्रतिकूल प्रभावों के बावजूद, भारत ने वास्तव में अपनी जलवायु महत्वाकांक्षा में वृद्धि की है। भारत विश्व में सबसे महत्वाकांक्षी स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तनों की अगुवाई कर रहा है।

उन्होंने यह भी कहा कि संसाधनों के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से 'सचेत और सुविचारित उपयोग' न कि 'विचारहीन तथा विनाशकारी' होना चाहिए। एलआईएफआई (लाइफस्टाइल फॉर द इनविरोनमेंट) जिसका भारत के पीएम ने ग्लासगो में सीओपी- 26 में अनावरण किया था, के लक्ष्य को विश्व द्वारा अपनाया जाना चाहिए जिससे कि मानवता तथा ग्रह की रक्षा हो सके। उन्होंने कहा, जिन्होंने विश्व को गलत दिशा में ले जाने में सबसे अधिक योगदान दिया है, उन्हें ही अनिवार्य रूप से स्थिरता के मार्ग पर वापस लाने के लिए सर्वाधिक प्रयास करना चाहिए।

अपने संबोधन में समानता की आवश्यकता के साथ करते हुए, उन्होंने कहा कि विकसित देशों को अनिवार्य रूप से अपनी ओर से समुचित महत्वाकांक्षा के साथ प्रत्युत्तर देना चाहिए तथा निश्चित रूप से अपने दोनों वादों- अपनी जीवनशैली में परिवर्तन लाने के जरिये उत्सर्जन में भारी कमी लाने तथा विकासशील देशों को अधिक वित्त तथा प्रौद्योगिकीय सहायता उपलब्ध कराने- को पूरा करना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि भारत के समावेशी तथा टिकाऊ वृहद -आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि देश के अनुकूलन तथा शमन दोनों ही उद्देश्यों को, हमारे लोगों की आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं के बड़े लक्ष्य के भीतर समान तथा न्यायोचित तरीके से पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि हमारे नवीनतम आम बजट ने इस मार्ग का अनुसरण करने के हमारे दृढ़ संकल्प की पुष्टि की है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वैश्विक पर्यावरण चुनौतियाँ। जलवायु न्याय प्राप्त करने संसाधनों के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण सचेत और सुविचारित रखना होगा न कि विचारहीन तथा विनाशकारी। बल्कि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने वैश्विक नियमों का पालन करना ही समाधान की सही राह होगी।

सोशल मीडिया से ख़फ़ा हैं बॉलीवुड सितारे

उद्दंड लोगों का कब्ज़ा : रितिक

बॉलीवुड का हर लोकप्रिय कलाकार सोशल मीडिया से बेहद खफा है. रितिक रोशन ने कहा कि इस मीडिया में ऐसे उद्दंड लोगों का कब्जा हो गया है, जो अगर आपको पसंद नहीं करते तो वे आपको नुकसान पहुंचाने की किसी भी हद तक जा सकते हैं. उन्होंने कहा कि कृष-3 दर्शकों की उदासीनता से नहीं, सोशल मीडिया के दुष्प्रचार से असफल हुई. सोशल मीडिया ने उनकी छवि को धूमिल करने का जबरदस्त प्रयास किया.

वहीं अनुष्का शर्मा कहती हैं, 'पता नहीं मैंने ऐसा क्या गुनाह कर दिया है कि लोग सोशल मीडिया पर लगातार मेरा मजाक बना रहे हैं, मुझ पर बनाए गए चुटकुलों की बाढ़ आ गई है.' अनुष्का ने चुपचाप अपने आपको इन तमाम हमलों से बचाने के लिए सोशल मीडिया से दूरी बना ली है. लेकिन सलमान खान को तो इसके लिए अदालत तक जाना पड़ा था और देश की सर्वोच्च अदालत में उनके आलोचक को यह सख्त हिदायत दी थी कि वह उनकी आलोचना न करें.

दुधारी तलवार की तरह

यह अजीब संयोग है कि एक जमाने में सेलिब्रिटी, खास करके बॉलीवुड के सेलिब्रिटी जिस सोशल मीडिया के पीछे भाग रहे थे, आज उनमें से ज्यादातर इससे पीछा छुड़ा रहे हैं. शायद इसकी वजह यह है कि बॉलीवुड सेलिब्रिटीज ने इसे सिर्फ अपनी लोकप्रियता के लिए, अपनी कारोबारी सफलता के लिए भुनाने की सोची थी, इसे महज अपने फायदे के लिए एक कामयाब मंच बनाने की कोशिश की थी. उन्होंने कभी यह नहीं सोचा था कि सोशल मीडिया एक दुधारी तलवार की तरह भी काम कर सकती है, जो अगर उन्हें लोकप्रिय करेगी तो अलोकप्रिय भी कर सकती है. सोशल मीडिया के फैन वास्तविक फैन से कहीं ज्यादा मुखर और बेफिक्र होते हैं, इसलिए वे किसी की भी चीड़फाड़ करने में जरा भी मुरव्वत नहीं करते.

आगामी फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' में गंगूबाई का रोल निभाने वाली अभिनेत्री आलिया भट्ट ने कहा कि मैं कभी क्वीन, किंग, नंबर 1 स्टार्स जैसे टाइटल में विश्वास नहीं करती. अगर आप एक कलात्मक क्षेत्र में हो तो आप फिल्मों को कंपेयर नहीं कर सकते, मुझे ऐसा करना नहीं पसंद. सभी में अपनी विशेषता होती है. मैं स्वयं खुद पर प्रेशर रखती हूं कि अपने काम को एक कदम आगे ले जाऊं और खुद को जीवन में स्टारडम से आकर्षित होने से रोकती हूं.

आकर्षित नहीं करता स्टारडम

आलिया ने कहा कि फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के लिए मैंने गंगूबाई के बोलने के अंदाज को काफी हद तक अपना लिया है. महिलाओं को लेकर गंगूबाई की जो सोच थी कि उन्हें सशक्त और स्वतंत्र रहना चाहिए, ये मुझे बेहद पसंद आई. गंगूबाई ने अक्सर मुश्किल घड़ी में खुद को मजबूत बनाया. महिलाओं के कल्याण के लिए वो जिस तरह से लड़ी, उन्होंने सभी के लिए एक उदाहरण पेश किया. वो लोगों का हित सोचती रही और समाज कल्याण को महत्व दिया, इस बात ने मुझे बेहद इंस्पायर किया.

कंगना-विद्या से तुलना पर कमेंट

दर्शक फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' में आलिया के किरदार की तुलना कंगना रनौत और विद्या बालन से कर रहे हैं. आलिया का कहना है कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है. आलिया ने बताया कि इसमें उन्हें कास्ट किया गया, ये उनके लिए बड़ी बात है. आलिया ने कहा कि 25 साल से जो एक निर्देशक हैं, जाहिर सी बात है कि उन्हें पता है कि मुख्य भूमिका में किसे कास्ट करना है. अगर किसी को लगता है कि मैं इस किरदार के लिए ठीक नहीं हूं, तो ये उनका मानना है. उन्हें इन बातों से फर्क नहीं पड़ता. ये सारी बातें मेरे लिए तब तक मायने नहीं रखतीं जब तक निर्देशक मुझे इस किरदार के लिए सही मानते हैं.

क्रिकेटर की पत्नी ने किया 'काचा बादाम' पर डांस

क्रिकेटर युजवेंद्र सिंह चहल की पत्नी धनश्री वर्मा एक बेहतरीन डांसर हैं. उनके डांस वीडियोज वायरल होते रहते हैं. सोशल मीडिया पर इन दिनों 'पुष्पा' और 'काचा बादाम' की धूम है. धनश्री ने 'काचा बादाम' पर डांस किया है. उनकी मां भी उनका पूरा साथ देती नजर आ रही हैं. धनश्री ने इस वीडियो को शेयर किया है. उन्होंने लाल रंग की वन पीस ड्रेस पहनी हुई है. उनकी मां ने भी मैचिंग करते हुए लाल रंग का सलवार सूट पहना हुआ है. उन्होंने रेड लिप्स का इमोटिकॉन शेयर किया.

- धनश्री के पोस्ट पर एक यूजर ने कमेंट किया, 'आप दोनों बहुत क्यूट हैं.'
- एक ने पूछा, 'यूजी भाई नहीं हैं क्या?'
- एक यूजर ने कहा, 'यही सोच रहा था कि इस ट्रेंड पर अभी तक वीडियो क्यों नहीं आई.'
- एक ने उनके कैप्शन को ध्यान में रखकर लिखा- 'तो यूजी चहल क्या हैं?'
- एक ने कहा- 'क्या, अगर यूजी इस कैप्शन को देख लें तो क्या होगा?'

ऐसे मिली प्रेरणा

धनश्री और युजवेंद्र ने दिसंबर 2020 में शादी की थी. धनश्री फिल्म 'कोई मिल गया' की शूटिंग के दौरान रितिक रोशन से मिली थीं. उन्हें वैसे तो डांस का पहले से शौक था लेकिन जब वह रितिक से मिलीं तो उन्होंने ठान लिया कि वह एक डांसर बनेंगी. धनश्री ने मशहूर कोरियोग्राफर श्यामक डावर से ट्रेनिंग ली हुई है.

एक्ट्रेस हिना खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है. वीडियो के शुरू में 4-5 सेकेंड में ही हिना नजर आ जाती हैं. वह जैसे ही कुछ कहने वाली होती हैं कि तभी एक्ट्रेस यामी गौतम वीडियो में नजर आती हैं.

हिना के इंस्टाग्राम पर यामी का कब्जा

यामी बताती हैं कि हिना का अकाउंट अब उनके कब्जे में है. फिर वह कहती हैं, 'क्या कहा आपने, ये क्या पागलपन है? आपने मेरा पागलपन अभी तक देखा ही कहां है!' इसके अलावा वे कहती हैं कि हिना को अपने जीवन का कोई एक ऐसा किस्सा सुनाना होगा जब वे अपने कंट्रोल से बाहर हो गईं, तभी उनका अकाउंट वापस मिलेगा. वहीं हिना भी बिना देरी किए कुछ ही देर बाद एक और वीडियो शेयर करती हैं. इस वीडियो में वह अपनी लाइफ के उस पल के बारे में बताती हैं जब वो सफलता के शिखर पर थीं और उन्होंने अपने करिअर की ग्रोथ के मद्देनजर सीरियल.'ये रिश्ता क्या कहलाता है' को छोड़ा था. हिना के लिए शो को छोड़ने का फैसला काफी मुश्किल भरा था. हिना ने किस्सा सुनाने के साथ ही यामी से रिक्वेस्ट की कि अब उनका अकाउंट वापस कर दिया जाए.

कपिल शर्मा ने की धक-धक गर्ल की तारीफ

माधुरी की खांसी पर होती भीड़ इकट्ठा

'**द** कपिल शर्मा शो' में कपिल शर्मा अपने अंदाज में माधुरी दीक्षित की तारीफ करते नजर आ रहे हैं. कपिल ने कहा कि उनके कॉलेज के दिनों में भले ही लड़कों के पास पैसे न हों, लेकिन अपने पर्स में वो माधुरी की फोटो जरूर रखते थे. कपिल ने कहा कि जब लड़के लड़कियों को फूलों से मारकर उनके साथ फ्लर्ट करते हैं तो उन्हें स्पेशल महसूस होता है, उन्हें लगता है कि वो माधुरी हैं. कपिल ने कहा कि माधुरी पहली एक्ट्रेस हैं जिनकी खांसी पर भी भीड़ इकट्ठा हो जाती थी. कपिल माधुरी से पूछते हैं कि उन्हें कैसा लगता है जब इतने सारे लोग उनके साथ फ्लर्ट करने की कोशिश करते हैं? जिस पर माधुरी ने मजेदार जवाब दिया. एक्ट्रेस ने कहा कि ऐसे में मुझे सिर्फ डॉ. नेने (माधुरी के पति) की याद आती है. उनकी बात सुनकर वहां बैठे सभी लोग हंसने लगते हैं. माधुरी पहली बार 'द फेम गेम' के जरिए अपना डिजिटल डेब्यू कर रही हैं.

हर्ष पर फूटा भारती का गुस्सा

TV मैजिक

टीवी की पॉपुलर जोड़ी भारती सिंह और हर्ष लिंबाचिया आजकल 'हुनरबाज' को होस्ट कर रहे हैं. इसी बीच 'इंडियाज बेस्ट डांसर' के सेट का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. वीडियो में हर्ष भारती के वजन को लेकर उन्हें छेड़ रहे हैं. हर्ष उन्हें बीन बैग कहते नजर आ रहे हैं. लेकिन भारती अपने हाजिर जवाब से हर्ष का मुंह बंद कर देती हैं. पहले हर्ष उन्हें कहते हैं, "बीन बैग जितना भी आरामदायक हो लेकिन जिंदगी भर बीन बैग के साथ नहीं होता न यार!" जिस पर सामने बैठे सभी जजेज हंसने लगते हैं. हर्ष बात को संभालते हुए कहते हैं कि मैं मजाक कर रहा था बेबी. भारती जवाब देते हुए कहती हैं, अरे! बीन बैग पर बैठने के लिए लोग तरसते हैं. दोनों की मजाकिया नोक-झोंक दर्शकों को बेहद पसंद आती है. भारती और हर्ष जल्द ही माता-पिता बनने वाले हैं. भारती अपनी प्रेगनेंसी एन्जॉय कर रही हैं और साथ ही अपने काम पर भी पूरी तरह फोकस कर रही हैं. भारती और हर्ष ने हाल ही में बेबी बंप के साथ फोटो शूट भी करवाया है.

सुर्ख़ साड़ी में सुहाना

लोगों ने कहा- हूबहू दीपिका जैसी

स्टार STYLE

शाहरुख खान ने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर शेयर की जिसमें वह लाल रंग की खूबसूरत साड़ी में नजर आ रही हैं. सुहाना का यह लुक स्टनिंग है और सेलिब्रिटीज ने उनकी तारीफों के पुल बांधे हैं. उनकी इस साड़ी को मनीष मल्होत्रा ने डिजाइन किया है. लाल रंग की साड़ी के साथ शाइनिंग ब्लाउज चार चांद लगा रहा है. उन्होंने अपने बालों का पोनी बनाया है. एथनिक इयररिंग्स और बिंदी उनके लुक को कम्प्लीट करते हैं. उन्होंने अपने मेकअप को लाइट रखा और न्यूड कलर की लिपस्टिक लगाई हुई है. फोटो को मनीष मल्होत्रा ने भी शेयर किया. इसके साथ उन्होंने लिखा- 'सुहाना.' उन्होंने हार्ट और फायर का इमोटिकॉन बनाया. उनके इस पोस्ट पर उनकी मां गौरी खान ने कमेंट किया, 'यह लाल रंग है... मनीष के वाइब से प्यार है.' इसी पोस्ट पर सुहाना ने हार्ट का इमोजी बनाया. भावना पांडे, महीप कपूर ने भी सुहाना खान के लुक्स की तारीफ की है.

- एक यूजर ने कमेंट किया, 'पहली बार मुझे लगा यह दीपिका हैं, गॉर्जियस.'
- एक अन्य लिखते हैं, 'हुस्न है सुहाना... उन पर यह कैप्शन फिट बैठता है.'
- एक अन्य यूजर ने भी कमेंट किया, 'पहली बार देखकर दीपिका जैसी लगीं. शानदार, आप हमेशा खूबसूरती बढ़ाते हैं.'

डेब्यू करना बाकी

सुहाना को हाल ही में आईपीएल नीलामी के वक्त देखा गया. उनके साथ आर्यन खान भी थे. भाई-बहन की तस्वीरें सोशल मीडिया पर छाई रहीं. सुहाना को अभी बॉलीवुड में डेब्यू करना बाकी है. उन्होंने इंग्लैंड के आर्डिंगली कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी की है और वह न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी की छात्रा थीं. इससे पहले, उन्होंने कई थिएटर शो और 'द ग्रे पार्ट ऑफ ब्लू' नामक एक शॉर्ट फिल्म में भी अभिनय किया.

अभिनेत्री रिया चक्रवर्ती काम पर लौट आई हैं. एक्ट्रेस ने अपना एक वीडियो साझा किया जिसमें वो रेडियो स्टेशन के स्टूडियो में नजर आईं.

हार नहीं मानतीं रिया

रिया ने कहा कि इस मुश्किल समय में जिन लोगों ने हमारा साथ दिया, मैं उन सभी को धन्यवाद कहना चाहती हूं. चाहे जो हो, सूरज हमेशा चमकता है. कभी हार नहीं मानना चाहिए. 14 जून 2020 को सुशांत सिंह राजपूत के निधन के बाद रिया मुंबई पुलिस, सीबीआई, एनसीबी और ईडी के राडार पर थीं. दिवंगत अभिनेता से जुड़े ड्रग्स केस में उन्हें सितंबर 2020 में जेल भी भेजा गया, जहां कुछ दिन बिताने के बाद उन्हें जमानत पर रिहा किया गया. रिया की बॉलीवुड वापसी को लेकर काफी कयास लगाए जा रहे थे. आखिरी बार वो अमिताभ बच्चन और इमरान हाशमी स्टारर फिल्म 'चेहरे' में नजर आई थीं.

भूमि ने लड़की से जताया प्यार

राजकुमार राव और भूमि पेडनेकर की फिल्म 'बधाई दो' कई कारणों से सुर्खियां बटोर रही है. फिल्म की कहानी एक गे लड़के और एक लेस्बियन लड़की के बारे में है जो समाज की किचकिच से बचने के लिए आपस में शादी कर लेते हैं. दोनों को लगता है कि शादी करके दोनों अपने तरीके से रूममेट की तरह रहेंगे. हालांकि प्रॉब्लम तब शुरू होती है जब घरवाले बच्चे की जिद करने लगते हैं. फिल्म की कहानी को ध्यान में रखते हुए भूमि ने इंस्टाग्राम पर अपनी को-स्टार चुम दारंग के साथ फोटो शेयर की है. इस फोटो को शेयर करते हुए भूमि ने मैसेज देने की कोशिश की है कि प्यार किसी से भी हो सकता है. फिल्म की कहानी भी कुछ यही मैसेज देती है. 'बधाई हो' की जबरदस्त कामयाबी के बाद मेकर्स ने अब 'बधाई दो' बनाने का फैसला किया था.

Gadgets जोन

MLK से 9 भाषाओं में अनुवाद

माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म कू एप ने MLK यानी Multi-Lingual Koo (बहुभाषी कू) फीचर पेश किया. इस फीचर से हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल, असमिया, बंगाली, तेलुगु, पंजाबी, गुजराती और अंग्रेजी में से किसी भी एक भाषा में किए गए मैसेज का इन बाकी 9 भाषाओं में तुरंत अनुवाद होता है. मूल टेक्स्ट यानी संदेश से जुड़ा संदर्भ और भाव अन्य भाषाओं में भी वैसे ही बना रहता है और रीयल टाइम में कई भाषाओं में ट्रांसलेशन होने के साथ मैसेज चला जाता है. इसके अलावा इस एप में लाइव वीडियो फीचर भी है, जिसके जरिये यूजर्स सीधे अपने फॉलोअर्स से जुड़ सकता है. लाइव वीडियो फीड के जरिये यूजर्स एक साथ अपने सभी दर्शकों से अपने दिल की बात कह सकते हैं.

सोशल एंटरप्राइज की ओर बढ़ते क़दम

पिछले कुछ समय में एनजीओ, सोशल एंटरप्राइज व अन्य सामाजिक संगठनों की संख्या में वृद्धि देखने को मिली. ऐसा नहीं है कि पहले ऐसे संगठन नहीं होते थे, पहले भी काफी ऐसे संगठन हुए हैं. बस अंतर उनकी एकाएक बढ़ती संख्या है. यह समाज के लिए और देश के लिए बहुत अच्छी बात है क्योंकि जिस देश का युवा देश की असमानता को हटाने की दिशा में पहल करेगा, उसे देश को आगे बढ़ाने से कोई नहीं रोक सकता. लेकिन किसी भी सोशल एंटरप्राइज को खोलने से पहले हमें विभिन्न बातों का ध्यान रखना बेहद जरूरी है. केवल जोश और जुनून कई बार नुकसान भी दे जाता है.

CAREER जोन

रिस्क

हर बिजनेस में चाहे वो छोटा हो या बड़ा, उसमें रिस्क जरूर होता है. कई बार हम तय कर लेते हैं कि हमने क्या करना है लेकिन उस काम को करने में कितना जोखिम हो सकता है. इसके बारे में कंपनी शुरू करने के बाद पता चलता है. अगर हम उस जोखिम को उठाने में सक्षम हैं, तब तो ठीक है लेकिन अगर न उठा पाए तो काफी नुकसान हो जाता है. सोशल एंटरप्राइज शुरू करने से पहले जोखिम के बारे में जरूर डिटेल से जांच लें. ये रिस्क विभिन्न तरह के हो सकते हैं, जो काम करने के दौरान अचानक सामने आते हैं.

रिसर्च कर आगे बढ़ें

कई बार लोगों को समाज के लिए काम करने का इतना जुनून सवार होता है कि वो एक रात में ही सब कुछ बदलकर रख देना चाहते हैं. समाज और देश के लिए काम करना बहुत अच्छी बात है लेकिन आपको ये ध्यान रखना होगा कि कई बार आपका छोटा प्रयास भी बहुत फायदेमंद होता है. इसलिए सबकुछ बदलने की एकाएक इच्छा न रखें और सोच-समझकर जल्दबाजी किए बगैर फैसला लें. सोशल एंटरप्राइज के बारे में सोचना और उसे चलाना दो बिलकुल अलग चीजें हैं. इसलिए सोच-समझकर पूरी रिसर्च करके ही आगे बढ़ें और अपना काम शुरू करें. उस फैसले को अपने इमोशन्स से दूर रखें या यूं कहें कि भावावेश में आकर कोई फैसला न लें.

विजन

ज्यादातर सोशल एंटरप्राइज इस क्षेत्र में नए होते हैं और उन्हें किसी कंपनी को शुरू करने का अनुभव नहीं होता. किसी कंपनी में काम करना व किसी कंपनी को खुद चलाने में काफी अंतर है. कई बार दूर से आसान दिखने वाली चीज उतनी आसान नहीं होती जितनी वो प्रतीत होती है. ऐसे में आपको अपना खुद का मूल्यांकन करना बेहद जरूरी है. अपना मूल्यांकन करें और यदि आपके अंदर विजन है, समझ है और काम करने का जज्बा है, तभी आप उस काम में सफल हो पाएंगे और कंपनी को सफलतापूर्वक चला पाएंगे.

टीम

एक सोशल एंटरप्राइज ज्यादार काफी छोटे स्तर से शुरू होती है, लेकिन समय के साथ-साथ इनमें से कई काफी बड़ी हो जाती हैं तो कई पीछे छूट जाती हैं. जब भी किसी कंपनी का विस्तार होता है तो उसमें कई लोगों को जोड़ना होता है, तो कई बार किसी दूसरी कंपनी के साथ साझेदारी करनी होती है. एक व्यक्ति जो कि सोशल एंटरप्राइज की शुरुआत करने जा रहा है, उसे इस बात को अपने जहन में रखना होगा कि भविष्य में उसे कई लोगों के साथ मिलकर काम करना पड़ सकता है.

संयम रखें

अगर किसी व्यक्ति में संयम है तो वो व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में धैर्य और संयम रखकर आसानी से निकल सकता है. ये बात हर जगह और चीज पर लागू होती है. जब आप कोई सोशल एंटरप्राइज चला रहे हैं तो कई बार आपको काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. कई बार ऐसी परिस्थिति आती है जब आपको आगे कुछ नहीं दिखता. ऐसे में आपके संयम और धैर्य की परीक्षा होती है और यदि आप ऐसी कठिन परिस्थिति में पास हो जाते हैं तो आपको आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता.

स्टाइलिश अंदाज में फैंका कचरा

फिटनेस फ्रीक अदा शर्मा हर रोज अपने बिंदास वीडियो और तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर करती रहती हैं. ऐसे ही अदा का एक लेटेस्ट वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. उन्होंने अपना कचरे के साथ एक वीडियो शूट किया है. सामने आए इस वीडियो में अदा ब्लैक कलर की मिनी ड्रेस और लॉन्ग बूट्स पहने दिखाई दे रही हैं. इसी के साथ इस वीडियो में कुछ अलग करने के लिए अदा ने अपने दोनों हाथों में कचरे के थैली ली हुई है और वो सड़क पर अतरंगी वॉक करती दिखाई दे रही हैं.

सोशल STAR

अदा ने कूड़े-कचरे के ढेर और डस्टबिन के साथ ये वीडियो शूट किया है. वो हाथों में ब्लैक कलर की थैलियां लेकर एंट्री करती हैं, जिसमें अमूमन लोग कूड़ा भरकर फेंकते हैं. वो यहीं नहीं रुकतीं, एक्ट्रेस सड़क पर रखे गए बड़े-बड़े डस्टबिन को साथ लेकर वॉक करती हैं, लेकिन स्टाइलिश अंदाज में कभी डस्टबिन पर बैठकर तो कभी उसके ऊपर पैर रखकर पोज देती हैं. उनका ये फनी अंदाज फैंस को बहुत पसंद आ रहा है. अदा के इस वीडियो पर कई सिलेब्स ने भी मजेदार कमेंट किए हैं. वहीं, फैंस भी जमकर प्यार बरसा रहे हैं.

- एक फैन ने लिखा, 'यहां भी आपकी अदा का क्या कहना अदा जी.'
- वहीं, दूसरे ने कमेंट किया, 'इस वीडियो ने मुझे बहुत इंस्पायर किया है कि कैसे डस्टबिन का यूज कर सकते हैं.'
- अदा शर्मा फिल्मों से ज्यादा अपने बिंदास अंदाज और अतरंगी फैशन सेंस को लेकर सुर्खियों में रहती हैं. अदा शर्मा बॉलीवुड की जानी-मानी एक्ट्रेस हैं. उन्हें हॉरर मूवी '1920' से सबसे ज्यादा फेम मिला था. इसके बाद वो 'हंसी तो फंसी' सहित कई मूवीज, वेब सीरीज और म्यूजिक वीडियो में नजर आईं.

सरकारी ज़मीन पर कब्ज़ा करने वालों पर जेडीए लेगा एक्शन

सरकारी जमीनों का 15 दिन में सर्वे करवाने के लिए जोनवार कमेटियां बनाई

जयपुर। जेडीए की ओर से पूर्व में कार्रवाई की गई थी। इसी तर्ज पर टीम बना मौका रिपोर्ट तैयार करेगी। इसके बाद कार्रवाई की जाएगी।

रीट पेपर लीक मामले के मास्टर माइंड रामकृपाल मीणा के स्कूल और कॉलेज को ज़मींदोज करने के बाद जेडीए अब उन संस्थाओं की बिल्डिंगों की कुंडली बनाने में लगा है जो इसी तरह सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करके बनी हुई है। जेडीए रीजन में जेडीए के अफसर की टीम सरकारी जमीन का रिकॉर्ड देखेगी। इसके बाद मौका रिपोर्ट जेडीसी को पेश करेगी। इसके लिए हर जोनवार एक विशेष कमेटियां बनाई है। इसमें उपायुक्त से लेकर एक्सईएन, असिस्टेंट टाउन प्लानर और प्रवर्तन अधिकारी को शामिल किया है। जेडीसी गौरव गोयल ने एक आदेश जारी कर इन कमेटियों को अपनी रिपोर्ट 15 दिन पेश करने के लिए कहा है। जेडीए की ओर से जारी आदेशों में आशंका जताई है कि रामकृपाल मीणा की तर्ज पर जयपुर में अन्य सरकारी जमीनों पर इस तरह के कब्जे करके आवासीय, कॉमर्शियल या इंस्टीट्यूशन परिसर बना लिए है। ऐसे में ये टीम जेडीए की सरकारी जमीन का रिकॉर्ड देखेंगी। इन सरकारी खाली जमीनों का मौका सर्वे करवाकर अपने-अपने जोन की रिपोर्ट तैयार करेगी।

तीन मंजिला बिल्डिंग को किया था जमीदोंजः जयपुर के गोपालपुरा बाइपास पर जगन्नाथपुरी कॉलोनी में पिछले दिनों जेडीए ने एक स्कूल-कॉलेज की 3 मंजिला बड़े भवन को जमीदोज किया था। यह बिल्डिंग में एसएस कॉलेज और एसएस पब्लिक स्कूल संचालित था। ये बिल्डिंग जेडीए की 1657 वर्गगज सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करके बनाई थी। इस स्कूल के ऑनर और संचालक रामकृपाल मीणा था, जो रीट भर्ती 2021 के पेपर लीक का मास्टर माइंड था। एसओजी और अन्य लोगों से जब रामकृपाल के स्कूल कॉलेज की शिकायत मिली तब उसे जेडीए ने तोड़कर जमीन का कब्जा लिया था।

प्रेम दिवस पर संस्कारित और सलज्ज कविताओं की अनूठी निर्झरणी बही : डॉ हरीश नवल

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। प्रेम दिवस पर गीतों के जनक डॉ किशन दाधीच, प्रसिद्ध व्यंगकार डॉ. हरीश नवल और डॉ. नीला मुखर्जी के सानिध्य में वेलेंटाइन दिवस पर स्तरीय काव्य संध्या का आयोजन राजस्थान इकाई के रचनाकार पटल पर हुआ। संस्थापक सुरेश चौधरी के निर्देशन में लक्ष्मण रामानुज, निरूपमा चतुर्वेदी, ज्ञानवती सक्सेना और वसुंधरा जी ने कविताएं सुनाई। संचालन आशा पांडे ओझा तथा ज्योत्सना सक्सेना ने किया।

त्री-तंत्री के सुरों से नेट-थियेट हुआ झंकृत

तीन सितारों पर राग यमन हुई जीवंत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। नेट-थियेट कार्यक्रम की 82वीं श्रृंखला शास्त्रीय संगीत के संवर्द्धक पद्मश्री स्व. प्रकाश चंद्र सुराणा और कला मर्मज्ञ स्व. कौशल भार्गव को समर्पित तीन सितार एक सांझ में जब राग यमन के स्वर सितार के तारों से निकले तो सुरीले सुरों से शास्त्रीय संगीत गुलजार हुआ।

नेट-थियेट के राजेन्द्र शर्मा राजू ने बताया कि राजस्थान में स्व. सुराणा एव स्व भार्गव ने कई दशकों तक शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार और संरक्षण के लिए जीवन पर्यंत कार्य किया तथा बैले समारोह के आयोजन कर देश के लब्ध प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायकों एवं बैले की विधाओं से जन साधारण को रूबरू करवाकर शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों जागरूक किया।

कार्यक्रम में राजस्थान के वरिष्ठ सितार वादक पण्डित हरिहर शरण भट्ट एवं उनके शिष्य गौरव भट्ट और कार्तिक भट्ट ने कार्यक्रम की शुरूआत राग यमन से की। इसमें आलाप, जोड, झाला की सुंदर प्रस्तुति से दर्शकों को रिझाया। इसके बाद तीन ताल द्रुत गति में एक धुन बजाई और अंत में राग पीलू में ठुमरी दादरे में कम्पोजिशन बजाकर भावभीनी श्रद्धांजली दी।

जयपुर शहर में यह पहला मौका था जब एक मंच पर तीन सितार वादकों ने अपनी उंगलियों से मधुर स्वरों को मुखरित किया।

मुख्यमंत्री ने किया 'राजस्थान स्वायत्त शासन' पत्रिका का विमोचन

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास पर राजस्थान स्वायत्त शासन संस्था की पत्रिका 'राजस्थान स्वायत्त शासन' का विमोचन किया। गहलोत ने पत्रिका के प्रकाशन के लिए संस्था के अध्यक्ष श्री केवल चन्द गुलेच्छा सहित अन्य पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि स्वायत्त शासन संस्थाओं के साथ ही अन्य विभागों के लिए भी यह पत्रिका संदर्भ पुस्तिका के रूप में उपयोगी साबित होगी। स्वायत्तशासी संस्थाओं से जुड़े कार्यों के संबंध में आमजन को इससे आवश्यक जानकारियां मिल सकेंगी। संस्था के सचिव पूर्व आईएएस प्रदीप बोरड़ ने बताया कि पत्रिका में स्वायत्तशासी संस्थाओं से संबंधित आदेश, निर्देश, परिपत्रों के साथ ही अन्य उपयोगी जानकारियों का समावेश किया गया है।

राज्यपाल को बाघ संरक्षण पर पोस्टर भेंट

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र से रविवार को जयपुर टाइगर फेस्टिवल के आशीष बैद ने यहां राजभवन में मुलाकात की। उन्होंने राज्यपाल को बाघ संरक्षण के बारे में जागरुकता लाने का संदेश देते 'सेव टाइगर' पोस्टर भेंट किए। इस दौरान शिप्रा बैद एवं श्री गौतम बैद भी उपस्थित रहे।

ज़िंदगी की जंग हार गई गैंगरेप पीड़िता

6 दिन नाले में पड़ी रही, शरीर में पड़ गए थे कीड़े

नागौर। नागौर की गैंगरेप पीड़िता जिंदगी की जंग हार गई है। गुरुवार देर शाम उसने एसएमएस हॉस्पिटल में दम तोड़ दिया। 8 दिन से वो यहां वैंटिलेटर पर थी। वह खाई में पड़ी मिली थी। पुलिस ने खुलासा किया था कि पीड़िता महिला को एक नाबलिग सहित दो आरोपी उसे 4 फरवरी को बाइक पर बैठाकर सुनसान जगह पर ले गए थे। जहां उससे गैंगरेप किया था। इसके बाद उसके गहने लूटे और गला दबाकर मरी समझकर खाई में फेंक दिया था। पीड़िता जिंदा थी, लेकिन उसके शरीर में कीड़े पड़ गए थे। 6 दिन तक वह अचेत पड़ी रही थी। नागौर स्क्र राममूर्ति जोशी ने बताया कि गुरुवार शाम पीड़िता की मौत हो गई है। परिजन और दलित संगठनों को पहले से ही पुलिस खुलासे पर यकीन नहीं है। उनके आरोप है कि इस मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपियों को बचाने का काम किया है। संवैधानिक विचार मंच के गीगराज जोड़ली व भीम सेना के अनिल धनेवाल के नेतृत्व में कई दलित नेता भी जयपुर स्थित एसएमएस हॉस्पिटल पहुंच गए है। इन सभी ने परिजनों के साथ आकर पुलिस द्वारा मेडिकल बोर्ड से करवाए जा रहे पोस्टमार्टम को भी रुकवा दिया है। इनकी मांग है कि इस मामले में लापरवाही बरतने वाले सभी पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर उनके खिलाफ मामला दर्ज कर गिरफ्तार किया जाए व मामले में शामिल सभी आरोपियों की गिरफ्तारी की जाए और पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता व न्याय दिलाया जाए।

6 दिन पहले नागौर एसपी राममूर्ति जोशी ने खुलासा किया था कि महिला से गैंग रेप के आरोपी सुरेश मेघवाल को गिरफ्तार किया गया। नाबालिग को भी डिटेन किया गया। महिला सुरेश को पहले से जानती थी। 4 फरवरी को फोन से बुलाने पर वह गांव के बाहर आई थी। सुरेश व नाबालिग उसे बाइक पर बैठाकर ले गए और सुनसान जगह दोनों ने गैंग रेप किया। इसके बाद दोनों ने मिलकर पीड़िता से मारपीट की और गला दबा दिया। वह अचेत हुई तो उसे मरा समझकर उसके गहने लूटे और खाई में फेंककर फरार हो गए।

खाई में तड़पती रही

पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर गुरुवार को महिला का पता लगाया तो वह खाई में पड़ी मिली। उसके शरीर पर नाखून की खरोंच के निशान थे। प्राइवेट पार्ट भी जख्मी था। पुलिस ने पीड़िता को डीडवाना बांगड़ हॉस्पिटल पहुंचाया था। यहां से जयपुर रेफर कर दिया था। पुलिस ने आरोपियों से गहने बरामद कर लिए थे और वारदात में इस्तेमाल की गई बाइक भी जब्त कर ली थी।

सीआई और हेड कॉन्स्टेबल सस्पेंड

पीड़िता के चाचा ससुर सहित अन्य परिजनों को पुलिस खुलासे पर भरोसा नहीं है। आरोप है कि पुलिस इस मामले में मुख्य आरोपियों को बचा रही है। इस पूरे मामले को लेकर रोष है। इस मामले के तूल पकड़ने के बाद डीडवाना सीआई नरेंद्र जाखड़ और हेड कॉन्स्टेबल प्रहलाद सिंह को सस्पेंड कर दिया था।

चिकित्सा मंत्री ने प्रदेश भर की 52 हजार से ज्यादा आशा सहयोगिनियों का प्रशासनिक नियंत्रण चिकित्सा विभाग के तहत करने की दी सहमति

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा ने प्रदेश भर में 52 हजार से ज्यादा आशा सहयोगिनियों का प्रशासनिक नियंत्रण चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के तहत करने की सहमति प्रदान कर दी है। स्वास्थ्य मंत्री ने गुरुवार को सचिवालय में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती ममता भूपेश के साथ हुई एक अहम बैठक में यह सहमति दी। बैठक में महिला एवं बाल विकास विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रेया गुहा, चिकित्सा विभाग के सचिव आशुतोष एटी पेडणेकर, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के मिशन निदेशक डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी, समेकित बाल विकास सेवाएं की आयुक्त उर्मिला राजोरिया सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मीणा ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र के लाभार्थी एवं चिकित्सा विभाग के लाभार्थी समान होने के कारण यह सहमति दी गई है। उन्होंने बताया कि आशा सहयोगिनी को मानदेय आईसीडीएस विभाग द्वारा एवं इंसेंटिव चिकित्सा विभाग द्वारा दिया जा रहा है। चिकित्सा विभाग के अधीन आने से ना केवल आशा सहयोगिनियों को समय पर मानदेय मिल पाएगा बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं में भी सुधार होगा। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में 55 हजार 816 मुख्य व 6 हजार 204 मिनी आंगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत हैं, जिसमें 55 हजार 816 आशा सहयोगिनी के पद स्वीकृत हैं। इन स्वीकृत पदों में 52 हजार 810 पदों पर आशा सहयोगिनी कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि आशा के रूप में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा इंसेंटिव आधारित पद सृजित किया गया था। राजस्थान में आईसीडीएस के साथ सहयोगिनी के रूप में समन्वित पद करते हुए अतिरिक्त रुप से मानदेय का प्रावधान किया गया था। दोनों पदों की भूमिका एवं कार्यक्षेत्र एक समान होने के कारण आशा सहयोगिनी के रूप में नवीन पद पर सहमति दी गई थी।

अब आशा सहयोगिनियों का प्रशासनिक नियंत्रण चिकित्सा विभाग के अधीन करने पर सहमति दे दी गई है।

रन फॉर रीपा

संजीव व नवज्योति ने मारी बाजी

ओटीएस फ़ैकल्टी वर्ग में टीकम चन्द रहे प्रथम

जयपुर। राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान (एचसीएम रीपा) में चल रहे प्रशिक्षण बैच 2021 के दौरान कार्मिकों द्वारा स्वास्थ्य के प्रति चेतना जागृति लाने के लिए खेल सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। शनिवार को 'रन फॉर रीपा' मिनी मैराथन दौड आयोजित की गई। रीपा परिसर से दौड को अतिरिक्त महानिदेशक टीकम चन्द बोहरा, अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) विष्णु कुमार गोयल एवं अतिरिक्त निदेशक (लेखा) नोपाराम पारीक ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। मिनी मैराथन दौड़ के पुरूष वर्ग में संजीव खेदड व महिला वर्ग में नवज्योति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ओटीएस फ़ैकल्टी वर्ग में टीकम चन्द बोहरा अतिरिक्त महानिदेशक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खेल सप्ताह के दौरान क्रिकेट, वॉलीबाल, कबड्डी, लॉन टेनिस, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, केरम, शतरंज एवं खो-खो इत्यादि खेलों का आयोजन किया जाएगा।

बोर्ड परीक्षाओं को देखते हुए 31 जुलाई तक लगाया रेस्मा

शिक्षक-कर्मचारियों ने हड़ताल की तो होगी जेल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और बोर्ड परीक्षाओं से जुड़े शिक्षक, कर्मचारी, अफसर अगले साढ़े 5 महीने तक हड़ताल या कार्य बहिष्कार नहीं कर सकेंगे। ऐसा करते ही सीधे जेल जाना पड़ेगा। करीब 4 लाख शिक्षक और कर्मचारी इस आदेश से प्रभावित होंगे। गृह विभाग ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 24 मार्च से प्रस्तावित परीक्षाओं के मद्देनजर 31 जुलाई 2022 तक रेस्मा लागू कर दिया है। राजस्थान एसेंशियल सर्विसेज मेंटेनेंस एक्ट माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ सभी कार्यालयों और सेवाओं पर यह लागू किया गया है। सरकार ने इसके आदेश जारी कर अत्यावश्यक सेवाएं घोषित किया है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में किसी तरह की अड़चन पैदा नहीं हो। कर्मचारी संगठन अपनी अलग-अलग पेंडिंग मांगों को लेकर बजट सत्र के दौरान या बजट आने के बाद कहीं आंदोलन और हड़ताल पर नहीं चले जाएं।

रीट परीक्षा में धांधली और पेपर लीक मामले में बोर्ड अध्यक्ष डीपी जारौली को बर्खास्त करने के बाद कई दूसरे अफसर, कर्मचारियों की भूमिका की भी एसओजी जांच-पड़ताल कर रही है। कई और गिरफ्तारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में कहीं बोर्ड कर्मचारी या स्टाफ हड़ताल नहीं कर दे। इस आशंका के कारण भी सरकार ने एहतियात के तौर पर बोर्ड परीक्षा से बहुत पहले ही रेस्मा लागू कर दिया है। जो बोर्ड एग्जाम रिजल्ट आने के बाद तक लागू रहेगा।

जानकारी के मुताबिक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रशासन से रेस्मा लागू करने की अनुशंसा राज्य सरकार ने ली थी। इसके आधार पर गृह विभाग ने नोटिफिकेशन जारी किया है।

आंदोलन कुचलने की कोशिश

राजस्थान प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश मंत्री अंजनी कुमार शर्मा ने बताया कि इस बार साढ़े 5 महीने के लम्बे पीरियड के लिए रेस्मा लागू किया गया है। करीब 4 लाख शिक्षक और कर्मचारी इस आदेश से प्रभावित होंगे। 85 हजार तृतीय श्रेणी शिक्षकों के ऑनलाइन तबादला आवेदन पूर्व शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा के समय 2021 में लिए गए थे। अब तक तबादले नहीं किए गए हैं। राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद के प्रदेश अध्यक्ष सिद्ध किशन गोदारा ने बताया कि केन्द्र के समान 7वां वेतनमान देने, प्रधानाचार्य , डीईओ, डीडी और उच्च अधिकारियों को केन्द्र के बराबर वेतनमान देने की मांग पेंडिंग है। इसे लेकर मुख्यमंत्री को बजट सत्र से पहले ज्ञापन भी दिया गया। कई बार प्रदर्शन किए जा चुके हैं।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

07

जयपुर >>सोमवार, 21 फरवरी, 2022

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां जीवन के तमाम अनसुलझे सवालों को सुलझाने के लिए हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना पड़ता है. ऐसे में बायोमेडिसिन और इंजीनियरिंग की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है. बायोमेडिकल इंजीनियर्स, बायोमेडिकल उपकरण बनाने का काम करते हैं. इससे रोगियों के जीवन को बचाया जाता है. बायोमेडिकल एक ऐसा टर्म है, जिसका उपयोग मेडिकल फील्ड में किया जाता है. इसमें इलेक्ट्रानिक मशीनों के जरिये रोगों को दूर किया जाता है. इस चिकित्सा प्रणाली में आवश्यक जानकारी के माध्यम से कंप्यूटर और माइक्रोप्रोसेसर का उपयोग होता है. हमारे शरीर में जीवित सामग्री और ऊतकों के गुणों को समझना और जानना चुनौती भरा काम होता है. बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के जरिये इसे बखूबी अंजाम दिया जाता है.

ये होते हैं मुख्य काम

- मेडिकल डिवाइस की टेस्टिंग, मूल्यांकन, रिसर्च और उन्हें बनाने का काम करते हैं.
- मुख्य काम होता कि वह हॉस्पिटल व मेडिकल सेंटर के लिए नये-नये इंस्ट्रूमेंट खरीदें और उनकी जांच करें.
- आज जो मेडिकल साइंस में ह्यूमन बॉडी ऑफिशियल पार्ट्स के जरिये लोगों को ठीक किया जा रहा है, वह भी बायोमेडिकल इंजीनियर की देन हैं.
- बायोमेडिकल इंजीनियर का काम यह भी है कि वह अस्पताल में उपयोग हो रहे उपकरणों की देखभाल करें.

अनसुलझे सवालों को सुलझाते हैं बायोमेडिकल इंजीनियर्स

अलग-अलग कोर्स में कई विकल्प

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग का करिअर काफी वास्ट है. आगे चलकर यह कई एरिया में बंट जाता है. देश में कई इंस्टीट्यूट्स हैं जो अलग-अलग कोर्स करने का अवसर देते हैं. इसके माध्यम से बीमारी का सही समय से इलाज किया जाता है. अगर कोई स्टूडेंट इसे करिअर के विकल्प के रूप में चुनता है, तो इसमें भविष्य में उसे बेहतर अवसर मिल सकते हैं. बायोमेडिकल साइंस, नेचुरल साइंस है जो कि बीमारी के रोकथाम, इलाज करने में सहायक है.

कंसल्टेंट, रिसर्चर या शिक्षक बन सकते हैं

कई करिअर विकल्पों के साथ बायोमेडिकल को एक डाइनैमिक फील्ड कहा जा सकता है. इसमें स्टडी करने के बाद स्टूडेंट्स कंसल्टेंट, रिसर्चर या फिर शिक्षक की भूमिका भी निभा सकते हैं.

ग्रोथ के सबसे बेहतर अवसर वाली फील्ड

भारत में बायोमेडिकल इंजीनियरिंग का हाई स्कोप है. इसमें करिअर ग्रोथ के अच्छे अवसर हैं. बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, इंजीनियरिंग और हेल्थ केयर के बीच की एक मजबूत कड़ी है. बायोफील्ड में इंजिनियरिंग इलेक्ट्रानिक्स, कंप्यूटर, मेकैनिकल, केमिकल और नैनोटेक्नोलाजी को शामिल किया जा सकता है. यह स्टूडेंट्स के ऊपर निर्भर करता है कि वे डाक्टर्स के साथ काम करना पसंद करते हैं और इसके बाद करिअर के ऑप्शन को चुनना चाहते हैं.

बीमारियों से बचाने का रहता है दायित्व

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग एक तरह से प्रयोगशालाओं में काम करने वाली फील्ड है, जहां पर मानव के जैविक नमूनों का परीक्षण हाइटेक मशीनों के माध्यम से किया जाता है. इसमें शामिल व्यक्ति सीधे तौर पर जांच के लिए जिम्मेदार होता है.

फाइनेंशियल प्रोफेशनल्स की डिमांड

पिछले कुछ वर्षों में, फाइनेंशियल इंडस्ट्री के नेचर में भारी बदलाव आया है और फाइनेंस प्रोफेशनल्स की आवश्यकता नए ग्रोथ और ट्रेंड के अनुसार सबसे आगे है. इस कोर्स का मुख्य फोकस रिस्क और क्रेडिट इनवेस्टमेंट में निहित है. यह एक मल्टीडिसिप्लिनरी फील्ड है जिसमें फाइनेंशियल एनालिसिस और मॉडलिंग, इंजीनियरिंग टेक्निक्स, मैथमेटिकल टूल्स और सॉफ्टवेयर ट्रेनिंग शामिल है. फाइनेंशियल इंजीनियरिंग सेविंग, इनवेस्टमेंट, उधार लेने, उधार देने और रिस्क मैनेजमेंट के बारे में निर्णय लेने के लिए साइंस-बेस्ड मैथेमेटिकल मॉडल का एप्लीकेशन है. मास्टर इन साइंस या मास्टर्स इन फाइनेंशियल इंजीनियरिंग (एमएफई) आपको नई क्वांटेटिव रोल के लिए तैयार करेगा जैसे कि रिस्क मॉडल और ट्रेडिंग डायरेक्टली, लाइब्रेरी कंट्रोल, मॉडल वैलिडेशन, रिस्क मैनेजमेंट और प्रोग्रामिंग.

महत्व

यह स्टडी का वह फील्ड है जो पोर्टफोलियो के कुल रिस्क का आकलन करके इनवेस्टमेंट में रिस्क को कम करने में मदद करता है. यह कोर्स फाइनेंशियल मार्केट की जरूरतों और चाहतों के मिलान के सरल माध्यमों से अधिक सक्रिय और कुशल बनाने में भी सहायता करता है. कोर्स बिजनेस के प्रोडक्ट और संपत्ति का फाइनेंशियल एनालिसिस देने में मदद करता है. कंपनी की स्ट्रैटजी को आगे बढ़ाने में भी मदद करता है. मार्केट के भविष्य के बिहेवियर की भविष्यवाणी और विश्लेषण करने के लिए पाठ्यक्रम रियल टाइम की इकोनॉमिक उत्तेजना भी पैदा करता है.

सब्जेक्ट और कोर्स

अंडरग्रेजुएट कोर्स (UG) – बीटेक फाइनेंशियल इंजीनियरिंग

पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स (PG) – एमएस इन फाइनेंशियल इंजीनियरिंग, एमटेक फाइनेंशियल इंजीनियरिंग, एमएस इन कंप्यूटेशनल फाइनांस, एमएस इन मैथेमेटिकल फाइनेंस, एमएस इन फाइनेंशियल मैथेमेटिक्स एंड क्वांटेटिव फाइनेंस

पीएचडी कोर्स – फाइनेंशियल इंजीनियरिंग

सर्टिफिकेशन कोर्स – रिस्क मैनेजमेंट अस्योरेंस, इंफोर्मेशन सिस्टम ऑडिटर, सर्टिफिकेशन इन क्वांटिटिव फाइनेंस, मशीन लर्निंग फॉर ट्रेडिंग इंट्रेस्ट, रेट मॉडल्स रिइनफोर्समेंट लर्निंग इन फाइनांस।

मास्टर्स कराने वाले विश्व के टॉप यूनिवर्सिटी, कॉलेज

- जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्केले
- वाशिंगटन यूनिवर्सिटी
- स्टोनी ब्रुक यूनिवर्सिटी
- नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी
- बारूच कॉलेज
- यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया लॉस एंजिल्स
- मिशिगन यूनिवर्सिटी
- यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस एट अर्बाना-शैंपेन

भारत में टॉप यूनिवर्सिटी

- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी - खड़गपुर
- क्वांटइंस्टी क्वांटिटेटिव लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्वांटिटेटिव फाइनेंस, मुंबई
- जीडी गोयनका एजुकेशन सिटी, हरियाणा

करिअर पाथ

इस क्षेत्र में मास्टर डिग्री प्राप्त करने वाले उम्मीदवार के पास फाइनेंस इंडस्ट्री में करिअर बनाने के विभिन्न ऑप्शंस होते हैं. बड़ी कंपनियों में ये हाई-लेवल पोजीशन में भर्ती किए जाते हैं. फाइनेंशियल इंजीनियरिंग करने के इच्छुक कैंडिडेट के पास करिअर विकल्प कुछ इस तरह के होते हैं-

- एग्जीक्यूशन
- ट्रेडिंग
- वैल्युएशन ऑफ ऑप्शन
- फाइनेंस रेगुलेशन
- डेरिवेटिव प्राइसिंग
- मार्केट एनालिस्ट
- कॉरपोरेट फाइनेंस
- रिस्क मैनेजमेंट
- रिस्क एनालिस्ट
- पोर्टफोलियो मैनेजमेंट
- स्ट्रक्चर्ड प्रोडक्ट्स

जरूरी स्किल

पायथन, जावा, सी++ और स्काला जैसी भाषाओं में कोडिंग स्पेशलाइजेशन के बेसिक स्किल के अलावा आपके पास कम्युनिकेशन और एनालिटिकल स्किल भी होना चाहिए. कैंडिडेट को लाइनर अल्जेब्रा, स्पेसिअल ज्यामेट्री, स्टोकेस्टिक कैलकुलस और डेफरेंसियल इक्वेशंस की समझ होनी चाहिए. कैंडिडेट इंडस्ट्री में नवीनतम डेवलपमेंट के साथ बने रहें. कैंडिडेट्स को फ्यूचर फाइनेंशियल मॉडल के निर्माण के लिए लगातार पढ़ने, क्रंच करने और सूचनाओं को लागू करने का आदी होना चाहिए.

Success Story

एग्जाम देने से लगता था डर स्ट्रैटजी से क्लीयर की UPSC

यूपीएससी सिविल सेवा को लेकर उम्मीदवारों के मन में तमाम मिथक होते हैं. इसकी वजह से वे कई बार सफलता से चूक जाते हैं. सिविल सेवा परीक्षा में सफलता हासिल कर आईएएस अफसर बनने वाले प्रथम कौशिक के दिमाग में भी परीक्षा को लेकर कुछ मिथक थे और इस वजह से अच्छी तैयारी होने के बावजूद वे परीक्षा में असफल हो गए. इसके बाद उन्होंने कई चीजों पर ध्यान दिया और दोबारा बेहतर तरीके से प्रयास कर आईएएस बनने का सपना पूरा कर लिया.

दूसरे अटेम्प्ट में मिली सफलता

प्रथम ने बताया कि पहले प्रयास में उन्होंने अच्छी तैयारी की लेकिन उनके दिमाग में एक डर बैठ गया कि इस परीक्षा को पास करना काफी मुश्किल है. जब वे परीक्षा देने पहुंचे तो इसी डर के चलते अपना सेल्फ कॉन्फिडेंस खो बैठे, इस वजह से वे फेल हो गए. दूसरा प्रयास करने से पहले उन्होंने सेल्फ कॉन्फिडेंस हासिल किया और असफलता के डर को मन से निकाल दिया. दूसरे प्रयास में उन्होंने ऑल इंडिया रैंक 5 हासिल कर लक्ष्य हासिल कर लिया.

अभ्यर्थियों को दी ये सलाह

प्रथम ने बताया कि सबसे पहले अपना बेस मजबूत बनाएं, कक्षा 6टी से 12वीं कक्षा की NCERT किताबों को पढ़ें. रेगुलर अखबार पढ़ते रहें और करेंट अफेयर्स के बेस को मजबूत बनाएं. उन्होंने साथ ही बताया कि ऑप्शनल सब्जेक्ट का सिलेक्शन सोच-समझकर करना चाहिए.

इस स्ट्रैटजी को अपनाया

अपनी गलतियों पर काम करने के बाद अभ्यर्थियों को एक स्ट्रैटजी बनाना चाहिए और उसी स्ट्रैटजी पर लगातार काम करना चाहिए. जिस सब्जेक्ट में समस्या आए, सबसे पहले उसी सब्जेक्ट पर काम करना चाहिए. ऐसा ही करते हुए सरल सब्जेक्ट की ओर जाएं और सभी सब्जेक्ट पर कमांड बनाएं. आत्मविश्वास और पॉजिटिव एटीट्यूड रखें. असफलता से घबराएं नहीं और रेगुलर मेहनत करना जारी रखें. UPSC के दौरान सेल्फ स्टडी सबसे ज्यादा हेल्पफुल साबित होगी, आंसर राइटिंग प्रैक्टिस और रिवीजन करना भी बहुत जरूरी होता है.

बिट्स पिलानी : जूनियर रिसर्च फेलोशिप

बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, पिलानी के डिपार्टमेंट ऑफ मैथेमेटिक्स ने जूनियर रिसर्च फेलो पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं. चयनित अभ्यर्थियों को संस्थान से ही पीएचडी प्रोग्राम करने का अवसर दिया जाएगा. इच्छुक आवेदक 20 फरवरी, 2022 तक आवेदन कर सकते हैं.

क्या है योग्यता

आवेदकों के पास किसी मान्य युनिवर्सिटी से मैथेमेटिक्स/कंप्यूटर साइंस में मास्टर्स डिग्री होनी जरूरी है. इसके साथ ही, अनिवार्य है कि आवेदक ने गेट/नेट/अन्य नेशनल-लेवल पीएचडी एंट्रेंस टेस्ट पास किया हो.

क्या होंगे फायदे

चयनित आवेदकों को पहले 2 वर्षों तक 31 हजार रुपए और उसके बाद प्रोजेक्ट पूरा होने तक 35 हजार रुपए दिए जाएंगे. आवेदकों को एचआरए भी दिया जाएगा.

कैसे करें आवेदन

आवेदन करने के लिए @pilani.bits-pilani.ac.in पर सीवी और जरूरी दस्तावेज भेजने होंगे.

बिजनेस के लिए ऐसे जुटाएँ फंड्स

एंटरप्रेन्योर के तौर पर अपना पहला कदम रखते हुए और स्टार्टअप शुरू करते वक्त आपको सबसे ज्यादा जरूरत फंड्स की होती है. इन्हीं के जरिये आप अपने बिजनेस को अच्छे से चला पाते हैं और अपने प्रोडक्ट व सर्विस को बेहतर बना पाते हैं. हालांकि, फंड्स जुटाना इतना आसान नहीं होता. आपको इसके लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है और तब जाकर आपको अपने स्टार्टअप के लिए पैसा मिलता है.

एंजल इन्वेस्टिंग

अगर आपके पास अपने बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए फंड्स नहीं हैं तो आप एंजल इन्वेस्टर्स की मदद ले सकते हैं. यह वे लोग होते हैं, जो बिजनेस में अपनी अलग पहचान रखते हैं और उनकी इस बिजनेस क्षेत्र में साख होती है. वे खुद काफी सफल होते हैं और अपने रिसोर्सेज को नये स्टार्टअप्स में इस्तेमाल करने के लिए तैयार रहते हैं. ऐसे ही एंजल इन्वेस्टर्स के सामने शानदार पिच प्रस्तुत करके आप अपने बिजनेस के लिए फंड्स पा सकते हैं. यह इन्वेस्टर्स आपको समय-समय पर सही सलाह भी देते हैं.

पार्टनरशिप

जब भी आप कोई स्टार्टअप शुरू करें और आपके पास फंड्स की कमी हो, तो आप ऐसे किसी व्यक्ति को अपना पार्टनर बना सकते हैं, जो आपको फंड्स दे सके और जिसे उस बिजनेस की जानकारी भी हो. इस तरह से आपको बिजनेस में लिंक्स भी मिल जाएंगे, आपका काम भी आसान हो जाएगा और आपको फंड्स की कमी भी नहीं होगी. हालांकि, किसी को भी अपना बिजनेस पार्टनर बनाने से पहले, उसके बारे में अच्छी तरह से पता कर लें. ऐसा न हो कि वह शख्स भविष्य में आपको या आपके बिजनेस को नुकसान पहुंचाए.

बैंक फाइनेंसिंग

आजकल बहुत सी ऐसी बैंक होती हैं, जो स्टार्टअप्स और छोटे बिजनेस को आर्थिक मदद देती हैं. इनसे फंड्स पाने के लिए आपके पास बेहतरीन बिजनेस प्लान होना जरूरी है. साथ ही, आपके पास क्लीयर फाइनेंशियल प्रोजेक्शंस भी होनी चाहिए. हालांकि, बैंक से पैसा लेते समय यह सुनिश्चित कर लें कि आप तय समय में इस पैसे को ब्याज सहित लौटा सकेंगे या नहीं.

आज के दौर में बिजनेस को सफल बनाने में कम्युनिकेशन चैनल्स का अहम योगदान होता है. जब आपके कस्टमर्स आपसे बेहतर तरीके से कम्युनिकेट कर पाएंगे, तभी वे आपसे संतुष्ट रहेंगे. जानिए, आप कैसे कम्युनिकेशन को बेहतर कर सकते हैं -

कम्युनिकेशन को बेहतर बनाने के फंडे

अपना बेस्ट दें

बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है कि आप हर क्षेत्र में अपना बेस्ट दें. जब बात कस्टमर्स या क्लाइंट्स की आए, तो कोशिश करें कि उन्हें बेस्ट कम्युनिकेशन चैनल्स मुहैया करवाएं ताकि उन्हें कोई समस्या न हो.

चैनल को बेहतर करें

आपके कम्युनिकेशन चैनल्स ऐसे होने चाहिए, जिनका इस्तेमाल करते वक्त आपके कस्टमर्स या क्लाइंट्स को कोई दिक्कत न हो. साथ ही, इन चैनल्स को समय-समय पर अपडेट करते रहें, तभी आप समय के साथ आगे बढ़ सकेंगे.

एडमिशन Alert

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बैंक मैनेजमेंट, पुणे, महाराष्ट्र

कोर्स : पीजीडीएम प्रोग्राम

योग्यता : न्यूनतम 50 फीसदी मार्क्स के साथ बैचलर्स डिग्री जरूरी है.

चयन प्रक्रिया : राइटिंग एबिलिटी टेस्ट, इंटरव्यू

आवेदन की अंतिम तारीख : 20 मार्च, 2022

रिजल्ट की तारीख : मई 2022

सीखने की कोई उम्र नहीं होती है और न ही कोई बंधन. आप उम्र व करिअर के किसी भी पड़ाव पर कुछ भी सीख सकते हैं, बस आपके अंदर सीखने की ललक होनी चाहिए. इन दिनों स्किल बेस्ड जॉब्स का ट्रेंड है. इनमें लोग अपने हुनर के हिसाब से नौकरी हासिल कर सकते हैं. हालांकि, करिअर में आगे बढ़ते रहने के लिए जॉब स्किल्स के साथ ही बिहेवियरल स्किल का होना भी बहुत जरूरी है. कुछ लाइफ स्किल्स से पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ काफी आसान हो जाती है. अगर आप करिअर में लगातार ग्रोथ हासिल करना चाहते हैं तो आपको लाइफ स्किल्स और बिहेवियरल स्किल्स पर फोकस बढ़ा देना चाहिए. इससे नौकरी में सफलता हर राह पर आपके कदम चूमेगी.

करिअॅर में सफलता के लिए ज़रूरी है स्किल

इमोशंस को लेकर रहें सावधान

आप चाहे जिस भी क्षेत्र में काम कर रहे हों, आपको इमोशनल इंटेलिजेंस का मतलब जरूर पता होना चाहिए. इमोशनल इंटेलिजेंस यानी अपने भावों का सही जगह और सही तरीके से इस्तेमाल करना आना चाहिए. आपको अपने इमोशंस को बेकार की जगहों पर बर्बाद नहीं करना चाहिए लेकिन साथ ही बिल्कुल कठोर भी नहीं हो जाना चाहिए.

चुप रहने की कला

हर किसी को अपने शब्दों और आवाज पर कंट्रोल करना आना चाहिए. कई बार हम लोग किसी ऐसी परिस्थिति में फंस जाते हैं, जहां सामने वाले पर बहुत गुस्सा आ रहा होता है. ऐसे हालात में भी अपने गुस्से पर कंट्रोल करना और शांत रहना आना चाहिए. अपने गुस्से को कभी अपनी कमजोरी न बनने दें.

सीखें 'ना' कहना

बात सीनियर की हो या जूनियर की, हर समय सबको हां कहने की गलती मत करें. कभी-कभी जरूरत पड़ जाने पर ना कहना भी सीखें. अगर आप हमेशा अपनी लिमिट से बाहर जाकर सबको हर चीज के लिए हां कहते रहेंगे तो लोग आपका फायदा उठाने लग जाएंगे.

टाइम मैनेजमेंट है अहम

बचपन से ही हमें टाइम मैनेजमेंट का पाठ पढ़ाया जाता है लेकिन इसके बावजूद कई लोग टाइम को सही तरीके से मैनेज करना सीख नहीं पाते हैं. करिअर में ग्रोथ हासिल करने के लिए टाइम मैनेजमेंट की कला आना सबसे ज्यादा जरूरी है. इससे आप वर्कलाइफ और पर्सनल लाइफ में सही बैलेंस भी बना सकेंगे.

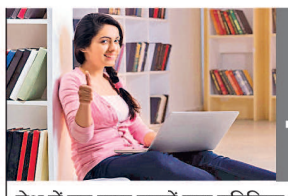

IAS की तैयारी के सीक्रेट टिप्स

देश में हर साल लाखों युवा प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी के लिए यूपीएससी परीक्षा की तैयारी करते हैं. लेकिन इसमें सभी सफल हो जाएं, ऐसा भी जरूरी नहीं है. कुछ उम्मीदवारों को यूपीएससी परीक्षा में सफल होने के लिए कई अटेम्प्ट देने पड़ते हैं. वहीं, कुछ पहले अटेम्प्ट में ही आईएएस टॉपर की लिस्ट में शामिल हो जाते हैं. अगर आप यूपीएससी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं और आईएएस ऑफिसर बनना चाहते हैं तो आपको अपनी रणनीति में कुछ बदलाव करना होगा. आईएएस टॉपर बनने के लिए न सिर्फ कई तरह के त्याग करने होते हैं, बल्कि कुछ सीक्रेट टिप्स पर भी काम करना पड़ता है. जानिए, यूपीएससी परीक्षा टॉप करने के लिए आपको किन बातों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है.

- पढ़ाई करते हुए भी यूपीएससी परीक्षा की तैयारी शुरू की जा सकती है.
- पहले प्रयास में सफल होने के लिए यूपीएससी सिलेबस को अच्छी तरह से देखें और समझें.
- अपना स्टडी मटीरियल खुद तैयार करें.
- अपने सोर्सेस को सीमित रखें और जरूरत पड़ने पर इंटरनेट का सहारा लें.
- हर दिन 8-9 घंटे पढ़ाई करके भी सफलता हासिल की जा सकती है.
- सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने से पहले खुद को मानसिक तौर पर मजबूत बनाएं.
- अपने इरादों को मजबूत रखें और उसी हिसाब से यूपीएससी परीक्षा की तैयारी करें.
- सिलेबस खत्म होने के बाद रिवीजन पर ध्यान केंद्रित करें.
- ज्यादा से ज्यादा मॉक टेस्ट दें.
- अपनी कमियों को समझकर उन्हें सुधारने की कोशिश करें.

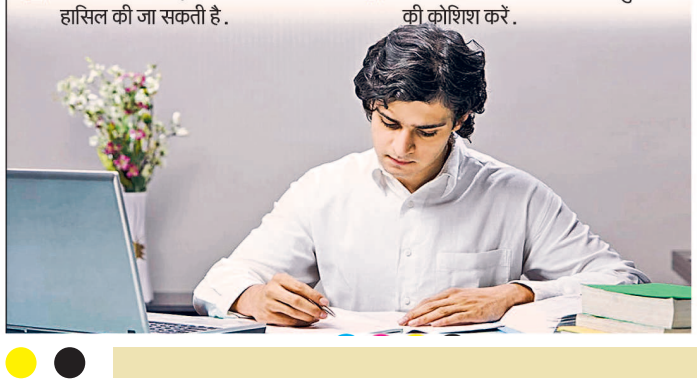

इंटरनल जॉब भी आगे बढ़ने का बेहतर विकल्प

अप्लाई कर सकते हैं

कई कंपनियां इंटरनल जॉब निकालती हैं और अपने कर्मचारियों के साथ साझा करती हैं. इसकी दो वजह होती है- कोई वर्तमान कर्मचारी उस जॉब के लिए अप्लाई कर सकता है या फिर किसी ऐसे इंसान को रेफर कर सकता है, जो उसके लिए उपयुक्त हो.

प्रमोशन पाने का विकल्प

इंटरनल जॉब प्रमोशन पाने का भी एक बेहतर विकल्प होता है. किसी ने ऐसे पद के लिए जॉब्स निकाली हैं जो आपकी प्रोफाइल से मिलती है औप आप वह काम करने के लिए परफेक्ट हैं तो आप आवेदन करके वह पोजिशन पा सकते हैं. बशर्ते आप कंपनी के मानकों पर खरे उतरें.

इसलिए है यह जरूरी

सामान्य तौर पर इंटरनल जॉब के अपने कई फायदे होते हैं. कैंडिडेट का चुनाव होने पर उसी कंपनी में रहते हुए पद, पैसा और जिम्मेदारियों में इजाफा होता है. यह उसके लिए नया अनुभव होता है, लेकिन कंपनी पुरानी होने के कारण उसके नियमों से भी वाकिफ रहता है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> सोमवार, 21 फरवरी, 2022

अलवर में मूकबधिर नाबालिग से रेप नहीं, ये चाहते हैं रीट के मुद्दे पर सरकार को बदनाम किया जाए

राज्यपाल अभिभाषण पर बहस के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भाजपा पर जमकर हमला बोला

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल के अभिभाषण पर चार दिन तक चली बहस के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भाजपा पर जमकर हमला बोला। सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि बहस तो हुई नहीं हमारे विपक्ष के सदस्य बोले नहीं. किस बहस का जवाब दूं। उन्होंने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि इतने साहब इकट्ठे हो गए कि पता नहीं साहबों का सरदार कौन होगा?

गहलोत ने कहा, अलवर में बालिका के साथ हुई दुर्घटना को राजनीतिक लाभ लेने के लिए रेप का नाम दे दिया। अलवर के केस को हमने सीबीआई को सौंप दिया। अब दिल्ली में सरकार इनकी है, इस केस को सीबीआई क्यों नहीं ले रही? उस बच्ची का रेप हुआ ही नहीं, उसके रेक्टम सहित अंगों में रेप का प्रमाण नहीं मिला। फिर भी रेप रेप चिल्ला रहे हैं। उस परिवार पर क्या बीत रही होगी?

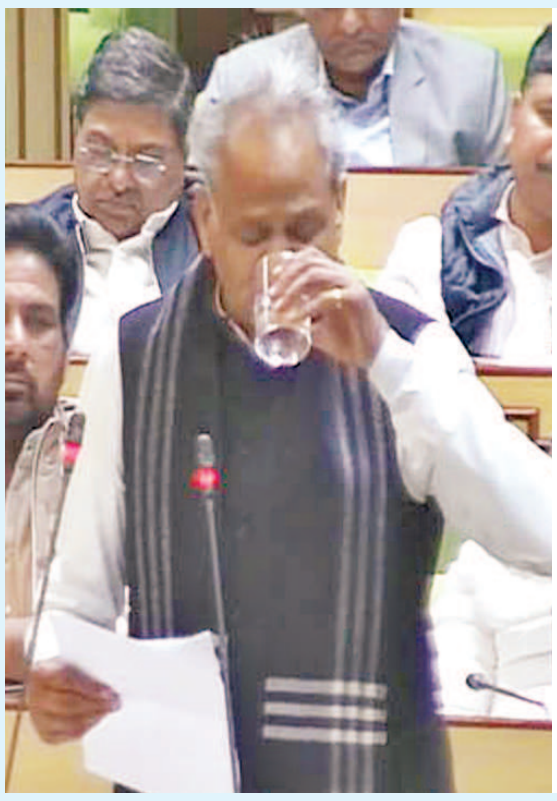

रीट को सीबीआई को देने के पीछे नौकरियां रोक कर सरकार को बदनाम करना है

गहलोत ने कहा, रीट की परीक्षा को सीबीआई का देने से मकसद है कि नौकरियां साल भर के लिए टल जाएं और फिर ये सरकार को बदनाम कर सकें कि सरकार नौकरियां नहीं दे पा रही है। लोकसभा में हनुमान बेनीवाल के सवाल के जवाब में केंद्र ने बताया है कि पिछले 10 साल में राजस्थान से सीबीआई को 37 केस मिले, 27 ट्रायल में हैं, यह हालत है। हमने पाली का मनोहर राजपुरोहित अपहरण, जोधपुर लवली कंडारा और अलवर का केस सीबीआई को दे रखा है लेकिन कुछ नहीं हुआ। हम चाहते हैं कि बच्चों के लिए अगले 10 दिन में भर्ती निकालें और अगले छह माह में नौकरी मिल जाए। टीचर्स की 62 हजार नौकरियां लग रही हैं। 62 हजार नौकरियां रुके कैसे कुछ लोग इस प्रयास में है।पिछले कई साल से कुछ लोग नौकरियां रोकने का प्रयास करते रहते हैं।

जहां शिक्षा कम है, वहां भाजपा ज्यादा

गहलोत ने कहा कि हमारे सीपीएम विधायक ने ही कहा था कि जहां शिक्षा कम है, वहां भाजपा ज्यादा है। यह बात सही है। जहां शिक्षा कम है, वहां भाजपा ज्यादा है। हम शिक्षा को बढ़ावा देंगे। हमने निजी सैक्टर में भी कॉलेज यूनिवर्सिटी को बढ़ावा दिया। पहले हमारे बच्चों को इंजीनियरिंग और मेडिकल शिक्षा के लिए महाराष्ट्र सहित बाहरी राज्यों में जाना पड़ता था, लेकिन अब हालात बदल गए हैं। राजस्थान देश का पहला राज्य होगा, जहां गांव गांव में अंग्रेजी स्कूल होंगे। विधायक जितने अंग्रेजी स्कूल मांगेगे, उतना देंगे। बीजेपी वाले तो यूनिवर्सिटी बंद करने वाले लोग हैं।

कोरोना में केंद्रीय मंत्री ने पापड़ खाने और नारियल चढ़ाने की सलाह दी: गहलोत ने कहा कि कोरोना से दुनिया चिंतित थी, इनके मंत्री क्या कह रहे थे? कोरोना में हमारे केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल कहते हैं, भाभीजी पापड़ खाओ। गजेंद्र सिंह शेखावत कहते हैं कि बालाजी के नारियल चढ़ाओ। भोले लोग इनके बहकावे में आ जाते हैं। इनके बहकावे में आकर कई लोग मारे गए। ये इस तरह की सोच के लोग हैं। कभी ताली बजती है, कभी थाली बजती है।

केंद्रीय जल संसाधन मंत्री को राजस्थान से कोई मतलब नहीं: गहलोत ने कहा कि जलशक्ति मंत्री राजस्थान के हैं, लेकिन उन्हें राजस्थान से कोई मतलब नहीं है। हमने केंद्रीय योजना में केंद्र का हिस्सा बढ़ाने की मांग की लेकिन ध्यान नहीं दिया। ईस्टर्न कैनाल प्रोजेक्ट को राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने की मांग लंबे समय से चल रही है। पीएम ने चुनाव से पहले इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित करने की घोषणा की, लेकिन आज तक कुछ नहीं हुआ। गहलोत ने कहा कि हो सकता है चुनाव आने तक केंद्र ईआरसीपी को केंद्रीय परियोजना घोषित कर दे। अगर नहीं करेंगा तो 13 जिले के लोग सबक सिखा देंगे, इन 13 जिलों में 82 विधानसभा क्षेत्र आते हैं। चुनाव में की गई घोषणा से मुकरेंगे तो जनता सबकक सिखाएगी। यूपी में अभी चुनाव आए तो उन्होंने केन-बेतवा लिंक को 44 हजार करोड़ रुपए दे दिए, जबकि यह पहले की योजना थी। गहलोत ने कहा कि हम कॉमर्शियल बैंकों से किसान के कर्ज माफ करने के लिए केंद्र सरकार से सैटलमेंट कराने का प्रयास कर रहे हैं। हमने केंद्र सरकार से कहा है कि हम सैटलमेंट का पैसा देने को तैयार हैं। अगर नीरव मोदी, एबीसी जैसे लोगों का कर्ज एनपीए हो सकता है, तो किसान का हम सैटलमेंट का पैसा हम देने को तैयार हैं। ये केवल किसान को भड़काना ही जानते हैं।

भाजपा नेताओं को पड़ी दिल्ली से फटकार: गहलोत ने कहा, बेरोजगारी का मुद्दा गंभीर है। बिहार में ट्रेन जल रही हैं। दिल्ली के इशारे पर ये विरोध कर रहे हैं। इन्हें दिल्ली से फटकार पड़ी है कि आप तीन साल में सत्ता विरोधी लहर नहीं पैदा कर पाए तो नॉन इश्यू को इश्यू बनाइए, इसीलिए ये विरोध कर रहे हैं। आज देश में हिंसा और अशांति का माहौल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ये सरकार को बदनाम कराना चाहते हैं। ये चाहते हैं रीट के मुद्दे पर सरकार को बदनाम किया जाए। सीबीआई को पहले ही बहुत से मामले दिए हैं उनकी ही जांच नहीं हो पा रही। ये चाहते हैं कि सीबीआई जांच के नाम पर नौकरियां अटक जाएं। हम चाहते हैं अगले कुछ दिनों में नौकरी दें। ये नौकरियां रोकना चाहते हैं। सीएम ने कहा कि बीजेपी ने रीट की सीबीआई जांच की मांग पर कार्यवाही में हिस्सा नहीं लिया। दो दिन से बीजेपी 12 बजे बाद से पूरे दिन के लिए सदन से बहिष्कार कर रही है। आज भी सदन में बीजेपी के विधायक नहीं है। विपक्ष की गैर मौजूदगी में ही मुख्यमंत्री गहलोत राज्यपाल के अभिभाषण पर हुई बहस का जवाब दे रहे हैं।

भारतीय स्टेट बैंक की राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता सम्पन्न

जयपुर। भारतीय स्टेट बैंक की राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता आंध्र प्रदेश के अमरावती में आयोजित हुई जिसमें राजस्थान की जयपुर की टीम ने कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लिया। इंटर सर्किल कबड्डी प्रतियोगिता में कप्तान सुरेश मीणा की अगुवाई में तीसरे और चौथे स्थान के लिए खेले गए मैच में जयपुर सर्किल ने चंडीगढ़ सर्किल को 25 अंकों के मुकाबले 43 अंकों से हराकर तीसरा स्थान प्राप्त किया मैन ऑफ द मैच जयपुर के श्री सूरज कुमार मीना इंदिरा गांधी नगर जगतपुरा ब्रांच में कार्यरत को चुना गया।

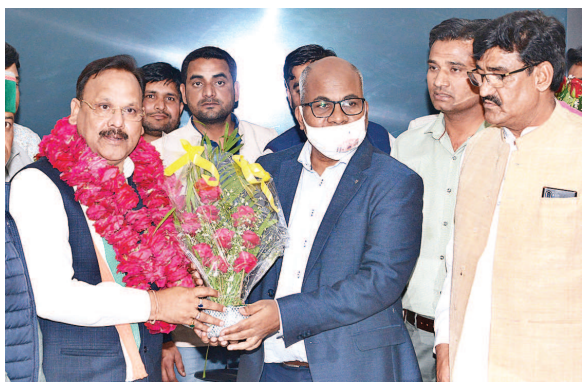

विधायक अमीनुद्दीन कागजी राजस्थान हज कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित

जयपुर। राज्य हज कमेटी के सदस्यों की प्रथम बैठक में मंगलवार को विधायक अमीनुद्दीन कागजी को राजस्थान हज कमेटी के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया गया। मंगलवार को यहां सचिवालय में हुई बैठक में नवनिर्वाचित अध्यक्ष कागजी ने उन पर विश्वास जताने के लिए कमेटी के सभी सदस्यों और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि वे राजस्थान के हाजियों को किसी तरह की समस्या नहीं आने देंगे। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही हज कमेटी की अगली बैठक बुलाकर हज यात्रा के संबंध में विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाएगी। राजस्थान स्टेट हज कमेटी के सदस्य सचिव डॉ महमूद अली खान एवं राज्य हज कमेटी के सभी सदस्य बैठक में उपस्थित रहे।

राजस्थान के पत्रकारों को भूखण्ड संबंधी पात्रता के लिए जार ने सौंपे सुझाव

राजस्थान पत्रकार आवास समिति के अध्यक्ष कुंजीलाल मीणा, सचिव पुरुषोत्तम शर्मा व समिति सदस्यों को जार राजस्थान ने दिया सुझाव पत्र

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान के श्रमजीवी पत्रकारों को प्रदेश के सभी जिलों में रियायती दर पर भूखण्ड मिलने की आस बंधी है। रियायती दर पर भूखण्ड आवंटन के लिए पात्रता संबंधी सुझाव मांगे गए हैं। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के प्रदेश अध्यक्ष राकेश कुमार शर्मा, प्रदेश महासचिव संजय सैनी, सचिन मुकेश शर्मा, पिंकसिटी प्रेस क्लब के महासचिव रामेन्द्र सोलंकी समेत अन्य वरिष्ठ पत्रकार राज्यस्तरीय पत्रकार आवास समिति के अध्यक्ष एवं प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास व आवासान विभाग कुंजीलाल मीणा से मिले और उन्हें पत्रकार आवास योजना के संबंध में पात्रता संबंधी सुझाव दिए गए। साथ ही जयपुर की नायला योजना समेत अन्य जिलों में लंबित पत्रकार आवासीय योजना के चयनित आवंटियों की सूची को यथावत रखते हुए वंचित पत्रकारों से आवेदन लेकर भूखण्ड देने की मांग रखी। इस मौके पर पत्रकार आवास योजना के राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश और हाईकोर्ट में लंबित याचिका के बारे में कुंजीलाल मीणा से लम्बी चर्चा हुई। कुंजीलाल मीणा ने चयनित सूची को यथावत रखने और आवेदन से वंचित पत्रकारों से आवेदन लेकर शीघ्र ही भूखण्ड आवंटन प्रक्रिया शुरु करने का आश्वासन दिया। राजस्थान पत्रकार आवास समिति के सदस्य सचिव व निदेशक पुरुषोत्तम शर्मा को पात्रता संबंधी सुझाव प्रेषित किए गए। गौरतलब है कि राजस्थान सरकार ने हाल ही राज्यस्तरीय पत्रकार आवास समिति समेत अन्य कमेटियों का गठन किया है। करीब एक पखवाड़े पहले पत्रकार आवास समिति की बैठक में प्रदेश में पत्रकार आवास योजना के लिए पात्रता संबंधी नियम तय करने पर चर्चा हुई और इस संबंध में सुझाव मांगे।

विवादित बिन्दुओं को हटाया जाए: कुंजीलाल मीणा से पत्रकार आवास योजना से जुड़े नियमों व बुकलेट से उन विवादित बिन्दुओं को हटाने की मांग रखी, जिनकी वजह से बेवजह कानूनी पेचीदिगियां उत्पन्न हो रही है। उन्हें बताया कि आवेदन बुकलेट में दर्शाए गए नियमों में दो-तीन विवादित बिन्दुओं को हटाए जाने की आवश्यकता है। इन विवादित बिन्दुओं की वजह से नायला पत्रकार योजना कानूनी पेचीदिगियों में अटकी। सबसे विवादित बिन्दु सफल आवेदकों को लॉटरी की तिथि से तीस दिवस के भीतर शपथ पत्र (निर्धारित प्रपत्र में) तथा अधिस्वीकृत पत्रकार से संबंधित प्रमाण पत्र (निर्धारित प्रपत्र में) में प्रस्तुत करने के बारे में लिखा है, जबकि राज्य सरकार के तय नियमों में इनका हवाला तक नहीं है। अधिस्वीकरण नियमों की जटिलता के चलते बड़े मीडिया संस्थानों के पत्रकारों का भी अधिस्वीकरण हो नहीं पाता है। पचास हजार की आबादी में भूखण्ड या पट्टा नहीं होने का शपथ पत्र देने का नियम भी उचित व तर्कसंगत नहीं है।

पात्रता के ये दिए सुझाव

- उन श्रमजीवी पत्रकारों को आवेदन का पात्र माना जाए, जो पांच साल से सक्रिय श्रमजीवी पत्रकार के तौर पर राजस्थान में कार्यरत हो। श्रमजीवी पत्रकार की न्यूनतम वार्षिक आय 80 हजार से अधिक हो।
- स्वयं के द्वारा दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करके पत्रकारों को उनके द्वारा दिए जाने वाले प्रमाण पत्र, डीआईपीआर की नियमित हाजिरी दस्तावेज, समाचार पत्रों व पत्र-पत्रिकाओं की ऑडिट रिपोर्ट एवं आईटीआर रिपोर्ट को आधार मानते हुए इन्हें पात्र माना जाए। अगर कोई ऑडिट रिपोर्ट या आईटीआई नहीं भरता है तो उक्त समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के लिए फार्म 16 और आय विवरण का शपथ पत्र लेकर पात्र माना जाए।
- प्रिंट और टीवी चैनल में लम्बे समय तक पत्रकारिता करने वाले बहुत से श्रमजीवी पत्रकार काफी सालों से डिजिटल मीडिया में है। वे वेबपोर्टल व न्यूज वेबसाइट का संचालन करके सक्रिय पत्रकारिता का दायित्व निभा रहे हैं। ऐसे पत्रकारों को पुराने पत्रकारिता अनुभव, नियुक्ति आदेश और वर्तमान में डिजिटल मीडिया संस्थानों के नियुक्ति आदेश, बायलाइन स्टोरीज को आधार मानते हुए इन्हें पात्र माना जाए। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तरह डिजिटल मीडिया के पत्रकारों को पात्रता संबंधी नियमों में शामिल किया जाए।
- प्रदेश की पत्रकार आवास योजना में दूरदर्शन, आकाशवाणी में लम्बे समय से कार्यरत संवाददाताओं, स्ट्रिंगर, फोटोग्राफर और वीडियो फोटोग्राफर को उनके पत्रकारिता अनुभव, नियुक्ति आदेश, पीएफ व सैलेरी स्टेटमेंट को आधार मानते हुए पत्रकार आवास योजना में शामिल किया जाए।
- पत्रकार आवास योजना नायला जयपुर एवं प्रदेश के अन्य जिलों की पत्रकार योजनाओं में चयनित किसी पत्रकार का आकस्मिक निधन हो गया है तो उनके आश्रित परिजनों को भूखण्ड दिए जाने के प्रावधान किए जाए ताकि दिवगंत पत्रकार के आश्रित परिजनों को राहत मिल सके।
- वे स्वतंत्र पत्रकार, फोटो जर्नलिस्ट्स, जिनकी आजीविका पूर्णतया पत्रकारिता पर निर्भर है, उनकी बायलाइन स्टोरी के आधार पर पात्र माना जाए।
- सबसे महत्वपूर्ण जयपुर की पिंकसिटी प्रेस एन्क्लेव योजना नायला में चयनित 574 पत्रकारों की सूची को यथावत रखा जाए और इसके साथ वंचित पत्रकारों से आवेदन लेकर योजना को मूर्तरुप दिया जाए। क्योंकि राज्य सरकार की ओर से गठित पत्रकार आवास आवंटन समिति ने ही 574 पत्रकारों का चयन करके सूची जारी की गई थी। सुझाव है कि उक्त 574 पत्रकारों की चयनित सूची को वर्तमान पत्रकार आवास समिति के समक्ष रखकर इसकी समीक्षा करवा ली जाए। जयपुर की तरह प्रदेश के अन्य जिलों में पत्रकारों की चयनित सूची को यथावत रखते हुए शेष पत्रकारों के लिए आवेदन लेकर उन्हें भूखण्ड आवंटन का लाभ दिया जाए।
- जेडीए, नगर निगम के अलावा नगर परिषद, नगर पालिका, उपखण्ड स्तर पर सैकड़ों पत्रकार कार्यरत है। इन सभी पत्रकारों के लिए उपखण्ड स्तर तक कार्यरत पत्रकारों को भूखण्ड देने के लिए पत्रकार आवास योजना लाई जाए। नगर पालिका, उपखण्ड स्तर, तहसील स्तर पर भूखण्ड देने के लिए अलग से प्रावधान रखे जाए। क्योंकि नगर पालिका, उपखण्ड व तहसील स्तर पर कार्यरत अधिकांश पत्रकारों को समाचार पत्र संस्थान, न्यूज चैनल संस्थान खबरों के आधार पर वेतनमान देते हैं। इनकी नियुक्ति स्थायी वेतनमान पर नहीं होती है, लेकिन नगर पालिका, तहसील व उपखण्ड स्तर पर ये पत्रकार कई सालों से पत्रकारिता कार्य कर रहे हैं। बहुत कम ही मीडिया संस्थान नियुक्ति पत्र जारी करते हैं और उन्हें परिचय पत्र जारी करते हैं। कॉलम के हिसाब से मेहनतनामा मिलता है। कुछेक को फिक्स वेतन भी मिलता है। हमारा सुझाव है कि मीडिया संस्थानों द्वारा दिए गए नियुक्ति पत्र व परिचय पत्र तथा उक्त दोनों नहीं होने पर पत्र-पत्रिकारों व न्यूज चैनलों में प्रकाशित पत्रकारों की बाईलाइन, स्टोरी, फिक्स या कॉलम के आधार पर दिए गए वेतनमान के साक्ष्यों को आधार मानते हुए भूखण्ड आवंटन के प्रावधान तय किए जाए। नियमों के सरलीकरण करने से माननीय मुख्यमंत्री की भावना के अनुरुप नगर पालिका, उपखण्ड व तहसील स्तर पर कार्यरत पत्रकारों को भूखण्ड मिल सकेंगे। इसलिए सुझाव है कि नियमों में सरलीकरण करते हुए उनकी बायलाइनों, समाचार पत्रों व न्यूज चैनल के नियुक्ति आदेश, परिचय पत्र को आधार मानते हुए ही नियम तय किए जाए। स्थानीय स्तर पर अधिकारियों व पत्रकारों की कमेटी बनाई जाए।
- जयपुर समेत अन्य किसी भी जिले में पत्रकार योजना शहरी आबादी के नजदीक ही लाई जाए। क्योंकि पत्रकार सुबह से देर रात तक कार्य करता है। ऐसे में हमारा सुझाव है कि पत्रकार आवास योजना आबादी क्षेत्र के पास ही लाई जाए। ताकि योजना लॉच होते ही वहां वे मकान बनाकर रह भी सके।

विश्व ब्राह्मण महासभा व हेल्प फाउंडेशन की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिता मिश्रा ने वरिष्ठ पत्रकारों यंग लीडर के स्थानीय संपादक अशोक शर्मा को विश्व ब्राह्मण महासभा का प्रदेश सोश्यल मीडिया प्रभारी नियुक्त किया। साथ ही नई गुंजाइश के स्थानीय संपादक दिनेश जोशी को हेल्प फाउंडेशन का प्रदेश मीडिया प्रभारी नियुक्त किया। इस अवसर पर डॉक्टर मिश्रा राष्ट्रीय सचिव सपना जैन व उनकी टीम ने साफा पहनाकर माल्यार्पण कर व प्रमाण पत्र देकर टीम को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

प्रशासन शहरों के संग अभियान

नई कोविड गाईडलाईन्स आने के बाद सुओमोटो 90ए कर लगाये जायेंगे कैम्प

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं माननीय नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल की मंशानुरूप प्रशासन शहरों के संग अभियान के अंतर्गत अधिक से अधिक पट्टे जारी करने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण प्रतिबद्ध है। जयपुर विकास आयुक्त गौरव गोयल द्वारा राज्य सरकार द्वारा कोविड-19 गाईडलाईन्स में मिली शिथिलता के पश्चात् कैम्प से पूर्व की सभी कार्यवाही यथा सुओमोटो 90ए प्रकरणों की तैयारी के अन्तर्गत विज्ञप्ति जारी करने, सर्वे कार्य, नामांतरण कार्य एवं ले-आऊट प्लान स्वीकृत किये जाने वाले कार्यों को पूर्ण किये जाने तथा कार्य में गति प्रदान किये जाने के निर्देश मंगलवार को आयोजित समीक्षा बैठक में दिये गये, जिससे राज्य सरकार द्वारा शिविर आयोजित करने के आदेश जारी होने के पश्चात् नियमन शिविर नियमित रूप से लगाये जा सकेंगे। जेडीसी ने बताया कि जहां कॉलोनियों में बसावट हो चुकी है वहां भी सुओमोटो 90ए की जाकर अग्रिम कार्यवाही करने तथा विकास समितियों से चर्चा कर सर्वे कार्य पूर्ण किया जाकर कैम्प लगाने की कार्ययोजन बनाने के निर्देश दिये गये। जेडीए द्वारा जिन योजनाओं के नक्शे अनुमोदित किये जा चुके है, उन योजनाओं में पट्टे जारी किये जाने की कार्यवाही निरन्तर जारी रखने के निर्देश दिये गये।

सरदार पटेल पुलिस, सुरक्षा एवं दाण्डिक न्याय विश्वविद्यालय जोधपुर का द्वितीय दीक्षान्त समारोह आयोजित

पुलिस की छवि आम नागरिक के मित्र के रूप में हो: राज्यपाल कलराज मिश्र

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि पुलिस अपराध नियंत्रण के साथ आम नागरिक के मित्र के रूप में भी अपनी पहचान बनाए। उन्होंने कहा कि पुलिस विश्वविद्यालय के जरिए पुलिसिंग की ?सी व्यवस्था पर कार्य किया जाना चाहिए जिससे पुलिसकर्मी अपने आचार-व्यवहार से पुलिस के प्रति आमजन का विश्वास जीत सकें।

राज्यपाल बुधवार को यहां राजभवन से सरदार पटेल पुलिस, सुरक्षा एवं दाण्डिक न्याय विश्वविद्यालय जोधपुर के दूसरे दीक्षान्त समारोह में ऑनलाइन सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश काल से ही पुलिस की दमनकारी छवि ही प्रचारित रही है, जिस कारण आम व्यक्ति पुलिस के पास जाते हुए डरता है। उन्होंने नागरिकों के मन में पुलिस के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने के बारे में कार्य किए जाने पर जोर दिया।

कुलाधिपति ने कहा कि पुलिस का कार्य आम जन को सुरक्षा प्रदान करने के साथ ही अपराध मुक्त समाज का निर्माण करना है। उन्होंने आह्वान किया कि पुलिस विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ मानवतावादी पहलुओं को भी अपनी शिक्षा में शामिल करे। उन्होंने कहा कि कमजोर वर्ग को सहज न्याय प्रदान करने, महिला उत्पीड़न के प्रकरणों को रोकने और शोषण मुक्ति के लिए वृहद स्तर पर कारगर शिक्षा प्रदान करने की दिशा में इस विश्वविद्यालय को कार्य करना चाहिए।

मिश्र ने अंग्रेजों के दौर से चले आ रहे पुलिस कानूनों की व्यावहारिकता पर शोध एवं अनुसंधान की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि आआरपीसी और सीआरपीसी की जो धाराएं प्रचलित है, वे आज भी अंग्रेजों के दौर की हैं। यह कानून उस समय बनाए गए थे जब प्राथमिकता भारत के नागरिक नहीं थे, इसलिए इन कानूनों में आमूलचूल बदलाव की जरूरत है। कुलाधिपति ने पुलिस विश्वविद्यालय में पुलिसिंग, आतंरिक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, फोरेंसिक साइंस आदि क्षेत्रों में शोध को अकादमिक गुणवत्ता एवं सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से प्रभावी बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि साइबर और संगठित अपराधों के बदलते रूपों का सामना करने के लिये पुलिसिंग की नवीन रणनीतियों पर गंभीर विचार-विमर्श की जरूरत है। इस अवसर पर उच्च शिक्षा राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि अपराधों की बदलती प्रकृति को देखते हुए अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए पुलिस पद्धतियों, शोध एवं अन्वेषण से जुड़े सभी पहलुओं से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया जाए। उन्होंने कहा कि आमजन के परिवादों और शिकायतों का त्वरित एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने पुलिस व्यवस्था में की तरह के नवाचार किए हैं। थानों में एफआईआर अनिवार्य रूप से दर्ज किए जाने, पुलिस थानों में स्वागत कक्ष के निर्माण, व्हाट्सएप हेल्पलाइन और पुलिस सुदृढ़ीकरण के लिए किए गए कार्यों के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश गोविन्द माथुर ने कहा कि भारतीय संविधान विधिक या राजनीतिक दस्तावेज ही नहीं है बल्कि सामाजिक दिशा निर्देशक भी है। संविधान के बारे में जागरुकता लाकर ही सत्यनिष्ठ एवं सजग समाज का निर्माण किया जा सकता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**